राजस्थान कर्मचारी चयन बोर्ड, जयपुर द्वारा आयोजित

AKSHANSH PUBLICATION

तृतीय श्रेणी
अध्यापक
मुख्य परीक्षा

REET MAINS

(LEVEL-II) (कक्षा 6 से 8 के लिए)

विद्यालय विषय
सामाजिक अध्ययन
शैक्षणिक रीति विज्ञान सहित

भाग-3

विशेषताएँ:

1. संपूर्ण पाठ्यक्रम एवं नवीनतम परीक्षा प्रणाली पर आधारित
2. परिक्षोपयोगी संभावित 2000+ प्रश्नोतरों का संग्रह
3. NCERT एवं RBSC की पाठ्यपुस्तकों पर आधारित पाठ्यसामग्री

विगत वर्ष के प्रश्नों का व्याख्यात्मक हल
लक्ष्य क्लासेज़, उदयपुर
के यूट्यूब चैनल पर उपलब्ध

इस सीरीज की सभी पुस्तकों को पढ़कर REET MAINS को प्रथम प्रयास में आसानी से Crack करें

नागवेन्द्र सर | राम सर | नीरज सर | प्रदीप सर | कुणाल सर

अक्षांश पब्लिकेशन
M. 9079798005, 6376491126
Plot No 1104, Shiksha Mandir, Sec 4, Circle, Main Road, Udaipur

राजस्थान कर्मचारी चयन बार्ड, जयपुर द्वारा आयोजित

तृतीय श्रेणी
अध्यापक
मुख्य परीक्षा

REET MAINS

(LEVEL-II) (कक्षा 6 से 8 के लिए)

विद्यालय विषय
सामाजिक अध्ययन
शैक्षणिक रीति विज्ञान सहित

भाग-3

"अक्षांश प्रकाशन की समस्त पुस्तकें लक्ष्य क्लासेज़, उदयपुर के अनुभवी शिक्षकों के मार्गदर्शन एवं अक्षांश प्रकाशन की समर्पित टीम के सहयोग से तैयार की गई हैं।"

संपादक
नागवेन्द्र सर, राम सर, नीरज सर, प्रदीप सर, कुणाल सर

सह संपादक
राजवर्धन बेगड़, गंगा सिंह, प्रकाश मेघवाल, विकास नाथ

प्रकाशन
अक्षांश प्रकाशन, उदयपुर (राज.)

MRP : ₹499

नोट :- अब लक्ष्य क्लासेज़ की सभी आगामी पुस्तकें केवल 'अक्षांश प्रकाशन' के माध्यम से ही प्रकाशित की जाएंगी। ये सभी पुस्तकें बाजार में 'अक्षांश' नाम से ही उपलब्ध होंगी। विद्यार्थियों को सूचित किया जाता है कि आगामी समय में 'लक्ष्य' नाम से कोई भी पुस्तक प्रकाशित नहीं की जाएगी। इसलिए कृपया पुस्तक खरीदते समय केवल 'अक्षांश प्रकाशन' के नाम से प्रकाशित और अधिकृत पुस्तकें ही बुक स्टोर्स से प्राप्त करें, ताकि आपको प्रमाणिक, अद्यतन एवं परीक्षा-उपयुक्त सामग्री प्राप्त हो।भविष्य में 'लक्ष्य' नाम से प्रकाशित किसी भी पुस्तक की सामग्री या गुणवत्ता की जिम्मेदारी 'अक्षांश प्रकाशन' या 'लक्ष्य क्लासेज़, उदयपुर' की नहीं होगी।

प्रकाशन
अक्षांश प्रकाशन
Plot No 1104, Shiksha Mandir, Sec 4, Circle,
Main Road, Udaipur

लक्ष्य क्लासेज़, उदयपुर से जुड़ने के लिए QR CODE स्कैन करे

TELEGRAM INSTAGRAM YOUTUBE FACEBOOK WHATSAPP

बुक कोड - AP0022

©सर्वाधिकार - अक्षांश प्रकाशन
lakshyaclassesudr@gmail.com

मुख्य वितरक - लक्ष्य क्लासेज़, उदयपुर
M. 9079798005, 6376491126

अक्षांश प्रकाशन ने इस पुस्तक के तथ्यों तथा विवरणों को उचित स्त्रोतों से प्राप्त किया है। इस पुस्तक में प्रकाशित सभी प्रकार की सामग्री पूर्णतः तथ्यात्मक विश्लेषण पर आधारित है। इस पुस्तक के किसी भी भाग और सामग्री को अक्षांश प्रकाशन की अनुमति और जानकारी के बिना अन्यत्र प्रकाशित या प्रिन्ट करना अनुचित है, यदि ऐसा पाया जाता है तो व्यक्ति या संस्थान स्वयं जिम्मेदार है।

विषय वस्तु

01 भारत का इतिहास

क्र.	अध्याय	पृष्ठ संख्या
1.	सिंधु घाटी सभ्यता	1 – 6
2.	वैदिक सभ्यता	7 – 12
3.	बौद्ध एवं जैन धर्म	13 – 17
4.	महाजनपद काल	18 – 21
5.	मौर्य साम्राज्य	22 – 30
6.	दिल्ली सल्तनत एवं मुगल साम्राज्य	31 – 50
7.	मुगल प्रशासन	51 – 54
8.	भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन	55 – 69

02 पर्यावरण (विश्व भूगोल)

क्र.	अध्याय	पृष्ठ संख्या
1.	पृथ्वी – गतियां, अक्षांश एवं देशांतर	71 – 77
2.	वायुमंडल – संघटन, संरचना, पवनें एवं दाब	78 – 88
3.	महासागर – ज्वारभाटा, धाराएँ	89 – 101
4.	संसार की प्रमुख वनस्पति एवं वन्य जीव	102 – 106
5.	विश्व – कृषि के प्रकार एवं औद्योगिक प्रदेश	107 – 110
6.	राजस्थान के कृषि आधारित उद्योग	111 – 113

03 भारतीय संविधान एवं राजव्यवस्था

क्र.	अध्याय	पृष्ठ संख्या
1.	भारतीय संविधान का निर्माण	115 – 118
2.	भारतीय संविधान की विशेषताएं	119 – 122
3.	प्रस्तावना	123 – 125
4.	मौलिक अधिकार	126 – 132
5.	मूल कर्त्तव्य	133 – 134
6.	राज्य के नीति-निदेशक तत्त्व	135 – 141
7.	राष्ट्रपति	142 – 147
8.	प्रधानमन्त्री एवं मन्त्रिपरिषद्	148 – 151
9.	संसद	152 – 163
10.	उच्चतम न्यायालय	164 – 168
11.	पंचायती राज एवं नगरीय स्वशासन	169 – 178
12.	भारतीय संघीय व्यवस्था, केन्द्र-राज्य संबंध	179 – 182
13.	भारतीय लोकतांत्रिक प्रक्रिया एवं उसमें महिला प्रतिनिधित्व	183 – 186

04 भारतीय अर्थव्यवस्था

क्र.	अध्याय	पृष्ठ संख्या
1.	अर्थव्यवस्था के क्षेत्रक	188 – 191
2.	औपनिवेशिक काल में भारतीय अर्थव्यवस्था	192 – 194
3.	उदारीकरण, निजीकरण एवं वैश्वीकरण	195 – 197
4.	विश्व व्यापार संगठन	198 – 201
5.	निर्धनता एवं खाद्य सुरक्षा	202 – 204
6.	मुद्रा एवं बैंकिंग	205 – 209
7.	उपभोक्ता एवं उनके अधिकार	210 – 213
8.	भारतीय अर्थव्यवस्था का विकास	214 – 218
9.	राजस्थान में कृषि एवं विपणन	219 – 226

05 शैक्षणिक रीतिविज्ञान

क्र.	अध्याय	पृष्ठ संख्या
1.	संकल्पना, प्रकृति एवं शिक्षण के उपागम	228 – 233
2.	शिक्षण विधियाँ	234 – 242
3.	शिक्षण में अधिगम सहायक सामग्री एवं उपयोग	243 – 246
4.	शिक्षण में चुनौतियाँ	247 – 251
5.	शिक्षण की मूल्यांकन विधियाँ	252 – 256
6.	निदानात्मक एवं उपचारात्मक शिक्षण	257 – 259

06 विगत वर्ष के प्रश्न

क्र.	अध्याय	पृष्ठ संख्या
1.	विगत वर्ष के प्रश्न	261 – 264

भारत का इतिहास

01 सिंधु घाटी सभ्यता

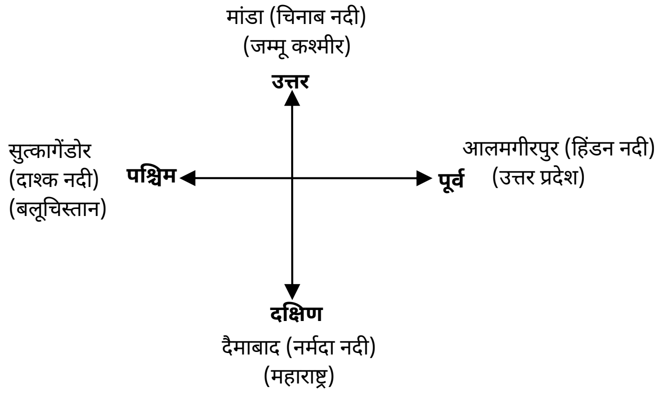

सैंधव सभ्यता की खोज-

- 1842 ई. में प्रकाशित अपने एक लेख में चार्ल्स मैसन ने भारत में एक प्राचीनतम नगर हड़प्पा के नीचे पुरानी सभ्यता दबी होने की बात कही।
- 1851-53 ई. में अलेक्जेण्डर कनिंघम ने हड़प्पा के टीले का सर्वेक्षण किया।
- 1856 ई. में पहली बार ए. कनिंघम ने हड़प्पा का मानचित्र जारी किया था।
- 1856 ई. में जॉन बर्टन व विलियम बर्टन ने हड़प्पा के टीले से प्राप्त ईंटों का प्रयोग लाहौर से कराची रेलवे लाईन बिछाने में किया।
- 1861 ई. में कनिंघम ने भारतीय पुरात्तत्व विभाग की स्थापना की।
- वर्ष 1904 में भारत के वायसराय लॉर्ड कर्जन ने भारतीय पुरात्त्व एवं सर्वेक्षण विभाग के अधीन भारत में प्राचीन इमारतों व नगरों के संरक्षण व सर्वेक्षण का आदेश पारित किया।
- इसी के शासनकाल में जॉन मार्शल नए निदेशक के रूप में भारत आए।
- वर्ष 1921 में जॉन मार्शल के निर्देशन में रायबहादुर दयाराम साहनी ने हड़प्पा के टीले की खोज की।
- वर्ष 1922 में राखालदास बनर्जी ने मोहनजोदड़ो की खोज की।

सैंधव सभ्यता का काल निर्धारण

- हड़प्पा सभ्यता के काल निर्धारण के संबंध में विद्वान एकमत नहीं है।
  1. जॉन मार्शल के अनुसार 3250 - 2750 ई.पू.
  2. अर्नेस्ट मैके के अनुसार 2800 - 2500 ई.पू.
  3. माधोस्वरूप वत्स के अनुसार 3500 - 2700 ई.पू.
  4. मार्टीमर ह्वीलर के अनुसार 2500 - 1500 ई.पू.
  5. डी.पी. अग्रवाल व रोमिला थापर के अनुसार 2300 - 1750 ई. पू.
- रेडियो कार्बन (C-14) तिथि के अनुसार हड़प्पा सभ्यता का सर्वमान्य काल 2300-1750 ई. पू. को माना जाता है।

सैंधव सभ्यता का विस्तार एवं क्षेत्र –

- सैंधव सभ्यता का विस्तार उत्तर में मांडा (जम्मू) से लेकर दक्षिण में नर्मदा नदी तक तथा पश्चिम में सुत्कागेंडोर से लेकर पूर्व में आलमगीरपुर (मेरठ) तक है।
- वह उत्तर से दक्षिण लगभग 1400 किमी. तक तथा पूर्व से पश्चिम लगभग 1600 किमी. तक फैली हुई थी। अभी तक उत्खनन तथा अनुसंधान द्वारा करीब 2800 स्थल ज्ञात किये गए हैं।
- हड़प्पा सभ्यता के अंतर्गत पंजाब, सिंध, बलूचिस्तान, अफगानिस्तान, गुजरात, राजस्थान, महाराष्ट्र, हरियाणा और पश्चिमी उत्तर प्रदेश के भाग आते हैं।

हड़प्पा सभ्यता के प्रमुख स्थल-

स्थल	नदी/सागर तट	खोजकर्ता
हड़प्पा	रावी नदी	दयाराम साहनी
मोहनजोदड़ो	सिंधु नदी	राखालदास बनर्जी
लोथल	भोगवा नदी	एस. आर. राव
कालीबंगा	घग्घर नदी	अमलानन्द घोष
रोपड़	सतलज नदी	यज्ञदत्त शर्मा
कोटदीजी	सिंधु नदी	फजल अहमद खां
चन्हुदड़ो	सिंधु नदी	एन. जी. मजूमदार
आलमगीरपुर	हिन्डन नदी	यज्ञदत्त शर्मा
सुत्कागेंडोर	दाश्क नदी	ऑरेल स्टाइन
बनवाली	सरस्वती नदी	रवीन्द्र सिंह बिस्ट

सैंधव सभ्यता का आकार एवं नामकरण –

- सैंधव सभ्यता का वास्तविक स्वरूप त्रिभुजाकार था, परंतु वर्तमान में नवीन स्थल प्रकाश में आने के कारण अब इस का आकार विषमकोणिय चतुर्भुजाकार है।
- जॉन मार्शल 'सिंधु सभ्यता' नाम का प्रयोग करने वाले पहले पुरातत्वविद् थे।
- सिंधु सभ्यता के विकास करने वाली जाति में सर्वाधिक मान्य मत है कि यहाँ की बहुसंख्यक जनता भूमध्यसागरीय प्रजाति की थी।

सैंधव सभ्यता की नगर योजना एवं विशेषताएँ –

- सिंधु या हड़प्पा सभ्यता को कांस्ययुगीन सभ्यता माना जाता है।
- सिंधु सभ्यता को प्रथम नगरीय सभ्यता भी माना जाता है।
- सिंधु घाटी सभ्यता की सबसे प्रमुख विशेषता अद्भुत नगर नियोजन व्यवस्था तथा जल निकासी प्रणाली है।
- सिंधु घाटी सभ्यता के अधिकतर नगर दो भागों में विभाजित थे- पूर्वी और पश्चिमी भाग।
- पूर्वी टीले पर आवासीय क्षेत्र मिले हैं, जिन्हें निचला शहर और पश्चिमी टीले पर दुर्ग के साक्ष्य मिले हैं।
- दुर्ग में शासक वर्ग निवास करता था तथा दुर्ग चारों ओर से दीवार से घिरा था। इसे निचले शहर से अलग किया गया था।
- दूसरा भाग जिसमें नगर के साक्ष्य मिले हैं यहाँ सामान्य नागरिक, व्यापारी, शिल्पकार, कारीगर, श्रमिक वर्ग निवास करते थे। निचला शहर भी दीवार से घिरा था।
- नगर योजना ग्रिड पद्धति पर आधारित है। मुख्य सड़कें उत्तर से दक्षिण की ओर जाति है तथा सड़कें एक-दूसरे को समकोण पर काटती थी।

- सड़कों के किनारे सुव्यवस्थित नालियाँ बनी थी। यह नालियाँ ऊपर से ढकी हुई होती थी। इनमें घरों से निकलने वाला गंदा पानी छोटी नालियों से होते हुए मुख्य सड़क पर बड़े नाले में मिल जाता था।
- हड़प्पा व मोहनजोदड़ो की नगर योजना लगभग समान थी। यहाँ पक्की हुई ईंटों का प्रयोग होता था।
- हड़प्पा सभ्यता के भवन पक्की ईंटों से बने होते थे। हालांकि कालीबंगा व रंगपुर में कच्ची ईटों का प्रयोग हुआ है। सभी जगहों की ईटों का अनुपात 4:2:1 होता था।
- प्रत्येक मकान में रसोईघर, स्नानागार, कुएँ एवं गंदे जल की निकासी के लिए नालियों का प्रबंध था।
- मकानों के दरवाजे मुख्य सड़क की ओर ना खुलकर पीछे की ओर गली में खुलते थे। मकानों के दरवाजे मध्य में न होकर एक किनारे पर होते थे।
- हड़प्पा सभ्यता की सबसे बड़ी ईंट मोहनजोदड़ों से मिली है।
- ज्यादातर हड़प्पा नगर नदियों के किनारे स्थित थे।

सैंधव सभ्यता के प्रमुख स्थल -

हड़प्पा –

- हड़प्पा स्थल की खोज वर्ष 1921 में दयाराम साहनी द्वारा की गई थी। यह स्थल वर्तमान में पाकिस्तान के पंजाब प्रांत में स्थित है, जो तत्कालीन मोंटगोमरी जिले (अब शाहीवाल) का हिस्सा था।
- हड़प्पा नगर रावी नदी के बाएँ तट पर स्थित है।
- वर्ष 1923-25 में दयाराम साहनी के निर्देशन में इस स्थल का उत्खनन कार्य किया गया।
- इसके उत्खनन में माधो स्वरूप वत्स (1926) और व्हीलर (1946) भी जुड़े हुए थे।

हड़प्पा से प्राप्त अवशेष -

1. स्त्री के गर्भ से निकलते हुए एक पौधे की मृणमूर्ति (इसे हड़प्पा वासियों ने उर्वरा देवी या पृथ्वी देवी माना गया है।)
2. बिना धड़ की एक पाषाण मूर्ति
3. कब्रिस्तान R-37
4. विशाल अन्नागार
5. काँसे का दर्पण
6. प्रसाधन मंजूषा (श्रृंगार पेटी)
7. मानव के साथ बकरे के शवाधान के साक्ष्य
8. अलंकृत मोहरें

- **नोट**- सर्वाधिक अलंकृत मोहरें हड़प्पा से, जबकि सर्वाधिक मोहरें मोहनजोदड़ो से प्राप्त हुई हैं।
- सैंधव सभ्यता की मोहरें सेलखड़ी (स्टेटाइड) से निर्मित होती थी।
- ये मुहरें 3 प्रकार की होती थी- आयताकार, वृत्ताकार और वर्गाकार (सर्वाधिक)।
- इन मोहरों पर एक श्रृंगी बैल या हिरण, कूबड़दार बैल, मातृदेवी, व्याघ्र, पशुपतिनाथ व भैंसा आदि का अंकन मिलता है।

मोहनजोदड़ो –

- वर्तमान समय में मोहनजोदड़ो पाकिस्तान के सिंध प्रांत के लरकाना जिले में सिंधु नदी के दाएँ किनारे पर स्थित प्रमुख नगर था।
- यह सैंधव सभ्यता का सबसे बड़ा और प्रमुख नगर था।
- इस स्थल की खोज सर्वप्रथम वर्ष 1922 में राखालदास बनर्जी द्वारा की गई थी।
- मोहनजोदड़ो का शाब्दिक अर्थ 'मृतकों का टीला' है।
- इसे सिंध का नखलिस्तान भी कहा जाता है।
- यह नगर 8 बार उजड़कर 9 बार बसा था, जिसके 7 क्रमिक स्तर मिले हैं।

मोहनजोदड़ो से प्राप्त अवशेष -

1. विशाल स्नानागार
- सबसे बड़ा सार्वजनिक स्थल 'विशाल स्नानागार' था,
- इस स्नानागार का धार्मिक महत्त्व था। इसके चारों ओर जल भण्डारण हेतु बड़े-बड़े टैंक मिले हैं।
- इसे जॉन मार्शल ने 'तत्कालीन विश्व का आश्चर्यजनक निर्माण' कहा और 'विराट वस्तु' की संज्ञा दी।

2. विशाल अन्नागार
- यह मोहनजोदड़ो की सबसे बड़ी इमारत अन्नागार थी।

3. पशुपतिनाथ शिव की मूर्ति
4. काँसे की नर्तकी की मूर्ति
5. तीन मुख वाले एक देवता के अंकन वाली मोहर
- इसके चारों तरफ भैंसा, हाथी, गेंडा, व्याघ्र व नीचले भाग पर 2 हिरण व ऊपरी भाग पर मछली व 10 अक्षरों का अंकन मिलता है।
- जॉन मार्शल ने इसे 'आद्यतम शिव' की उपाधि प्रदान की।

6. सर्वाधिक मोहरें
7. मानव कंकाल के साक्ष्य

लोथल -

- गुजरात के अहमदाबाद में भोगवा नदी के समीप स्थित लोथल, हड़प्पाकालीन सभ्यता का एक महत्त्वपूर्ण व्यापारिक केंद्र था।
- इस स्थल की खोज वर्ष 1954 में एस. आर. राव द्वारा की गई थी।
- वर्ष 1955-62 में उनके निर्देशन में उत्खनन कार्य किया गया।
- यह एक औद्योगिक नगर था ।
- एस.आर. राव ने इसे 'लघु हड़प्पा/लघु मोहनजोदड़ो' कहा है।
- यह पूरा नगर ही दीवारों से घिरा था। यहाँ के निवासी चावल भी उगाते थे।
- यह सिन्धु सभ्यता का एक प्रमुख गोदीबाड़ा (डॉक यार्ड) बंदरगाह/पत्तन था।
- 4 नाव के साक्ष्य से द. पूर्वी एशियाई देशों के साथ व्यापार का पता चलता है।
- सम्पूर्ण सैन्धव सभ्यता का सबसे बड़ा सार्वजनिक स्थल- लोथल का गोदीबाड़ा था। यहाँ से बंदरगाह के प्रमाण प्राप्त हुए हैं। लोथल उस समय पश्चिमी एशिया से व्यापार का प्रमुख स्थल था।

लोथल से प्राप्त अवशेष -

1. विशाल गोदीबाड़ा (डॉक यार्ड)
2. मनके बनाने का कारखाने के साक्ष्य
3. माप-बाट-माप-तौल के लिए पैमाना/हाथी दाँत पैमाना
4. खोपड़ी की शल्य चिकित्सा के साक्ष्य
5. तीन युगल शवाधान (एक साथ दफनाए शव)
- जिनका सिर उत्तर दिशा की तरफ तथा पैर दक्षिण दिशा की तरफ है।

6. अग्निकुंड/अग्निवेदिकाएँ
7. फ़ारस की मोहरें

कालीबंगा –
- कालीबंगा का शाब्दिक अर्थ 'काले रंग की चूड़ियाँ' होता है।
- कालीबंगा से हड़प्पा सभ्यता के साथ-साथ हड़प्पा पूर्व सभ्यता के अवशेष भी प्राप्त हुए हैं।
- कालीबंगा राजस्थान के हनुमानगढ़ जिले में घग्घर नदी के किनारे स्थित है।
- इसकी खोज वर्ष 1953 में अमलानंद घोष द्वारा की गई थी।
- वर्ष 1961-69 में बी. बी. लाल एवं बी. के. थापर द्वारा इस स्थल उत्खनन कार्य किया गया।
- डॉ. दशरथ शर्मा ने कालीबंगा को 'हड़प्पा संस्कृति की तीसरी राजधानी' कहा।
- कालीबंगा को 'दीन-हीन की बस्ती' कहा गया।

कालीबंगा से प्राप्त अवशेष –
1. जोते हुए खेत के साक्ष्य
2. ऊँट के प्रथम साक्ष्य
3. हल की आकृति
4. एक साथ 2 फसलें बोने के साक्ष्य
5. लकड़ी की नालियों के साक्ष्य
6. खोपड़ी की शल्य चिकित्सा के साक्ष्य

- यहाँ से प्राप्त एक खोपड़ी मे छेद किये हुए मिले हैं

7. 3 प्रकार के शवाधान के साक्ष्य-

- आंशिक शवाधान, पूर्ण शवाधान और दाह संस्कार

8. प्रथम भूकम्प के साक्ष्य
9. हवनकुण्ड के साक्ष्य
10. अलंकृत फर्श, ईंट तथा बेलनाकार मोहरे

नोट- बेलनाकार मोहरें मेसोपोटामिया में भी प्रचलित थी, अत: यह कहा जा सकता है, कि संभवत: कालीबंगा के व्यापारिक संबंध मेसोपोटामिया के साथ रहे होंगे।

चन्हुदड़ो -
- यह स्थल पाकिस्तान के सिंध प्रांत में स्थित है।
- इसकी सर्वप्रथम खोज वर्ष 1931 में नानी गोपाल मजूमदार (N.G. मजूमदार) ने की थी।
- इसका उत्खनन वर्ष 1935 में अर्नेस्ट मैके द्वारा किया गया।
- यह एक औद्योगिक केंद्र था।
- इस स्थल से प्राप्त अवशेषों में यह स्पष्ट होता है कि यह सीलों या मुद्राओं के उत्पादन का मुख्य केन्द्र था।
- चन्हूदड़ो सिंधु घाटी सभ्यता का एकमात्र पुरास्थल है, जहाँ से वक्राकार ईंटें मिली हैं।
- चन्हुदड़ो से किसी भी प्रकार के दुर्ग के साक्ष्य नहीं मिलते हैं।
- सम्पूर्ण सिन्धु सभ्यता का एकमात्र सभ्यता स्थल जहाँ से झुकर व झांगर संस्कृति के अवशेष प्राप्त होते हैं।

चन्हूदड़ो से प्राप्त अवशेष –
1. वक्राकार ईंटें
2. मनके बनाने के कारखाने के साक्ष्य
3. सौंदर्य प्रसाधन सामग्री (जैसे- लिपिस्टिक) के अवशेष
4. हाथी का खिलौना
5. पित्तल की इक्का गाड़ी
6. स्याही की दवात के साक्ष्य
7. बिल्ली के पीछे भागते हुए कुत्ते के पदचिह्न

बनवाली –
- बनवाली, हरियाणा के हिसार जिले में सरस्वती नदी के किनारे स्थित है।
- इसकी खोज एवं उत्खनन वर्ष 1973-74 में रवीन्द्र सिंह बिस्ट द्वारा किया गया।
- इसकी नगर योजना हड़प्पाकालीन नगरों से भिन्न थी।
- यहाँ से मिट्टी के खिलौने (हल) की प्राप्ति हुई है।
- इस स्थल से जौ, तिल तथा सरसों के ढेर मिले हैं।
- बनवाली में जल विकास प्रणाली का अभाव था।
- 11 कमरों वाला आयाताकार भवन के साक्ष्य मिले हैं।

रंगपुर -
- रंगपुर गुजरात के काठियावाड़ प्रायद्वीप में भादर नदी के समीप स्थित है।
- यहाँ पर पूर्वकालीन व उत्तरोत्तर हड़प्पा संस्कृति के अवशेष मिले हैं।
- इस स्थल से चावल की भूसी के प्रमाण मिले हैं।

सुरकोटदा -
- गुजरात राज्य के कच्छ क्षेत्र में इस स्थल की खोज वर्ष 1964 में जगपति जोशी ने की थी।
- यहाँ से घोड़े की हड्डी के अवशेष मिले हैं।
- कलश शवाधान के साक्ष्य यहाँ से मिले हैं।
- ऊपर से कब्र को पत्थर से ढकने के साक्ष्य यहाँ से मिला है।

धौलावीरा -
- यह नगर गुजरात के कच्छ रन के मध्य में खड़ीर द्वीप में स्थित है।
- इसकी खोज वर्ष 1967-68 ई. जगपति जोशी द्वारा की गई।
- व्यापक उत्खनन कार्य वर्ष 1990-91 में रवीन्द्र सिंह बिष्ट द्वारा किया गया।
- यह नगर हड़प्पा सभ्यता के पाँच सबसे बड़े नगरों में से है।
- अन्य हड़प्पाई स्थल के विपरीत धौलावीरा नगर तीन खंडों में विभाजित है।

1. दुर्ग 2. मध्यम नगर 3. निचला नगर

- यहाँ से पॉलिशदार सफेद पाषाण खण्ड (सूचना पट्ट) मिले हैं।
- धौलावीरा में जल संरक्षण से संबंधित उत्कृष्ट तकनीक का पता चलता है।
- यहाँ से सिंधु घाटी सभ्यता का एक मात्र स्टेडियम (खेल का मैदान) मिला है।
- घोड़े की कलाकृतियों के अवशेष भी मिले हैं।

सुत्कागेंडोर-
- पाकिस्तान के बलूचिस्तान प्रान्त में द्वाश्क नदी पर सुत्कागेंडोर स्थित है। यह सिंधु घाटी सभ्यता का ज्ञात सबसे पश्चिमी नगर है।
- यहाँ से बंदरगाह के अस्तित्व का पता चला है।

आलमगीरपुर-
- उत्तर प्रदेश के मेरठ जिले के हिंडन नदी के तट पर आलमगीरपुर स्थित है।
- यह स्थल सिंधु घाटी सभ्यता के सबसे पूर्वी विस्तार का प्रतीक माना जाता है।
- यहाँ से एक भी मातृदेवी की मूर्ति और मुद्रा प्राप्त नहीं हुई है।
- इस पुरास्थल की खोज में 'भारत सेवक समाज' संस्था का विशेष योगदान रहा।

रोपड़-

- रोपड़ पंजाब में सतलज नदी के तट पर स्थित है।
- रोपड़ स्वतंत्र भारत में सिंधु घाटी सभ्यता का खोजा गया प्रथन खुदाई स्थल है।
- सन् 1950 में इसकी खोज यज्ञदत्त शर्मा ने की ।
- यहाँ हड़प्पा पूर्व एवं हड़प्पाकालीन संस्कृतियों के अवशेष मिले हैं।
- शवों को अंडाकार गड्ढ़ों में दफनाया जाता था।
- यहाँ से मानवीय कब्र के नीचे एक कुत्ते का शव मिला हैं।

कोटदीजी-

- कोटदीजी पाकिस्तान के सिंध प्रांत में स्थित पुरातात्विक स्थल है।
- यह मोहनजोदड़ो के सामने सिंधु के पूर्वी तट पर है।
- यह स्थल हड़प्पा पूर्व और हड़प्पाकालीन दोनों से संबंधित है।
- यहाँ मकान कच्ची ईंटों से बने हैं, परन्तु नीवों में पत्थर का प्रयोग हुआ है।

राखीगढ़ी-

- यह स्थल हरियाणा राज्य के हिसार जिले में स्थित है।
- इसे पूर्व-हड़प्पा सभ्यता बस्ती स्थल के रूप में जाना जाता है।
- यह स्थल घग्घर नदी के तट पर स्थित इस स्थल की खोज वर्ष 1969 में प्रो. सूरजभान ने की थी।
- भारत में स्थित हड़प्पा सभ्यता के विशालतम नगरों में से एक राखीगढ़ी है।
- वर्ष 2015-16 के सम्पूर्ण उत्खन्न के बाद राखीगढ़ी को भारत में सबसे बड़ा क्षेत्र माना गया है। (लगभग 410 हैक्टेयर)

राजनीतिक व्यवस्था -

- हड़प्पा सभ्यता व्यापार और वाणिज्य आधारित थी। इसलिए शासन व्यवस्था में भी व्यापारी वर्ग की महत्त्वपूर्ण भूमिका थी।
- पिगट और व्हीलर आदि विद्वानों का मत है कि सुमेर और अक्कद की भांति मोहनजोदड़ो और हड़प्पा में भी पुरोहित लोग शासन करते थे। ये शासक प्रजा के हित का पूरा ध्यान रखते थे।
- हंटर के अनुसार, 'मोहनजोदड़ो का शासन राजतंत्रात्मक न होकर जनतंत्रात्मक था।'
- स्टुअर्ट पिग्गट नए मोहनजोदड़ो और हड़प्पा को इस सभ्यता की दो दो राजधानियाँ बताया है।

सामाजिक जीवन -

- मुहरों पर अंकित चित्र व मातृदेवी की मूर्ति से यह ज्ञात होता है कि हड़प्पा समाज सम्भवतः मातृ सत्तात्मक था।
- हड़प्पा सभ्यता के लोग शाकाहारी व माँसाहारी दोनों थे। इस सभ्यता के लोग भोजन में गेहूँ, जौ, खजूर एवं मांस खाते थे।
- सूती एवं ऊनी दोनों वस्त्रों का प्रयोग करते थे तथा इस सभ्यता के पुरुष व महिलाएँ दोनों आभूषणों का प्रयोग पुरुष व महिलायें दोनों करते थे।
- समाज की इकाई परम्परागत तौर पर परिवार था।
- मछली पकड़ना, शिकार करना, चौपड़, पासा खेलना आदि मनोरंजन के साधन थे।
- हड़प्पाई समाज में वर्ग विभेद विद्यामान था। यहाँ से प्राप्त श्रमिक आवासों के आधार पर दासों का अस्तित्व भी स्वीकार किया जाता है।
- हड़प्पा सभ्यता में शवों का अंतिम संस्कार तीन प्रकार से किया जाता था-

1. **पूर्ण समाधिकरण** - इसमें शव को पूर्ण रूप से भूमि में दफना दिया जाता था।
2. **आंशिक समाधिकरण** - इसमें शव पशु पक्षियों के खाने के बाद शेष भाग को भूमि में दफनाया जाता था।
3. **दाह संस्कार** - शव को अग्नि में जलाकर अंतिम संस्कार करना।

- हड़प्पा से आंशिक शवाधान, मोहनजोदड़ो से कलश शवाधान तथा कालीबंगा से प्रतीकात्मक शवाधान के साक्ष्य मिले हैं।
- रोपड़ में मनुष्य के साथ कुत्ते को तथा लोथल से बकरे को दफनाने के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं।
- सिंधु सभ्यता के लोग शांतिप्रिय थे। युद्ध का कोई साक्ष्य प्राप्त नहीं होता है, संभवत: उन्हें तलवार के बारे में पता नहीं था।

धार्मिक जीवन –

- हड़प्पा सभ्यता के लोग मातृदेवी, पुरुष देवता (पशुपति नाथ) लिंग-योनि, वृक्ष, जल नाग आदि की पूजा करते थे।
- मोहनजोदड़ो से प्राप्त एक मुहर पर तीन मुख वाला पुरुष योग ध्यान की मुद्रा में बैठा है। उसके सिर पर तीन सींग हैं। उसके बांयी ओर एक गैंडा और भैंसा तथा दांयी ओर एक हाथी और एक चीता व सामने दो हिरण है। यह पशुपति शिव का रूप माना जाता है। मार्शल ने इसे 'आद्यशिव' कहा है।
- हड़प्पा सभ्यता के लोग पृथ्वी को 'उर्वरता की देवी' मानकर इसकी पूजा करते थे।
- मूर्तिपूजा का आरम्भ सिन्धु सभ्यता से ही माना जाता है।
- सिंधु सभ्यता के किसी भी पुरास्थल के उत्खनन से मन्दिर के साक्ष्य नहीं मिले हैं।
- इस सभ्यता में अनेक ऐसी अग्निवेदिकाएँ पाई गई हैं जिनका सम्भवतः यज्ञ-वेदिकाओं के रूप में प्रयोग किया जाता था।
- हड़प्पा सभ्यता से मिले स्वस्तिक व चक्र सूर्यपूजा के प्रतीक हैं। स्वस्तिक चिन्ह सम्भवतः हड़प्पा सभ्यता की देन है।
- मोहनजोदड़ो व कालीबंगा से प्राप्त कुछ मुहरों पर पशु बलि के प्रमाण मिलतें हैं।
- हड़प्पा सभ्यता में पीपल सबसे पवित्र वृक्ष कूबड़ वाला बैल सबसे पवित्र पशु तथा बतख को पवित्र पक्षी माना जाता था।

आर्थिक जीवन -

- पुरातात्त्विक साक्ष्य से यह अनुमान लगाया गया है कि सिन्धु सभ्यता के लोग हल या कुदाल से खेती नहीं करते थे। यह सम्भव है कि ये लोग पत्थर की कुल्हाड़ियों से या लकड़ी के हल से भूमि को खोदकर खेती करते हों। इन लोगों के औज़ार बहुत अपरिष्कृत थे किन्तु यहाँ के किसान अपनी आवश्यकता से अधिक अन्न उगाते थे। अतिरिक्त अन्न का उपयोग व्यापार और वाणिज्य में होता था।
- सिन्धु घाटी के लोग खेती के अतिरिक्त बहुत-से उद्योग जानते थे। ये लोग कपास उगाना और कातना भली प्रकार जानते थे। यह संभव है कि कपास और सूती कपड़े का निर्यात किया जाता था। ये अनेक प्रकार के मिट्टी के बर्तन बनाते और कपड़ों को रंगते थे।
- सिन्धु घाटी के लोग अपनी वस्तुएँ मिस्र भी भेजते थे। यहाँ से कुछ मनके व हाथी दाँत का निर्यात किया जाता था। मैसोपोटामिया के एक ग्रंथ से ज्ञात होता है कि अक्कद साम्राज्य के समय में मेलुहा (सिन्धु घाटी सभ्यता) से आबनूस, तांबे, सोने, लालमणि और हाथीदाँत का निर्यात होता था।

पर्यावरण (विश्व भूगोल)

- **पृथ्वी की गतियाँ -** पृथ्वी की दो महत्त्वपूर्ण गतियाँ हैं जिनसे पृथ्वी पर दिन-रात तथा ऋतुएँ बनती है।

1. दैनिक या घूर्णन गति

- पृथ्वी 24 घण्टों में अपने अक्ष पर घूमती है, जिससे दिन - रात बनते हैं। पृथ्वी के सूर्य के सम्मुख वाले भाग पर दिन तथा पिछले भाग पर रात होती है।
- यह गति पश्चिम से पूर्व दिशा में होती है जिसके कारण सूर्य पूर्व से उदय एवं पश्चिम में अस्त होता है।
- पृथ्वी के पश्चिम से पूर्व दिशा में घूर्णन के कारण ही सभी नक्षत्रों एवं तारों की भ्रमण दिशा भी पूर्व से पश्चिम दिशा में रहती है।
- पृथ्वी की इस गति के कारण रेखीय क्षेत्र में अधिक उभार एवं ध्रुवों पर चपटापन पैदा हुआ है। इसके अतिरिक्त इस गति के कारण हवाओं और धाराओं की दिशा में बदलाव भी आता है।
- पृथ्वी का अक्ष पृथ्वी की कक्षा पथ पर समकोण न बना कर $23\frac{1}{2}^{0}$ का झुकाव सूर्य की परिक्रमा के समय एक ही दिशा में बना रहता है।
- पृथ्वी के इस झुकाव के फलस्वरूप उत्तर व दक्षिण ध्रुव बारी - बारी से सूर्य के सामने आते हैं, जिससे दोनों गोलार्द्धों में अलग - अलग ऋतुओं का आनन्द प्राप्त होता है। अगर यह अक्षीय झुकाव नहीं होता तो पृथ्वी पर रात - दिन बराबर होते तथा विभिन्न ऋतुओं का बनना भी असम्भव होता हैं।

2. परिक्रमण या वार्षिक गति

- पृथ्वी की दूसरी महत्त्वपूर्ण गति सूर्य के चारों ओर पश्चिम से पूर्व दिशा में अपनी कक्षा में वार्षिक यात्रा करना है।
- पृथ्वी की कक्षा लगभग 965 मिलियन किमी. लम्बी है जो लगभग $365\frac{1}{4}$ दिनों में 29.6 किमी. प्रति सेकेण्ड की गति से सम्पन्न होती है।
- पृथ्वी की कक्षा वृत्ताकार न होकर अण्डाकार है जिससे सूर्य और पृथ्वी की दूरी परिक्रमण के दौरान बदलती रहती है।
- पृथ्वी और सूर्य के मध्य औसत दूरी 150 मिलियन किमी. है।
- **उपसौर (Perihelion) :** पृथ्वी जब सूर्य के निकटतम दूरी पर होती है तो उपसौर कहलाता है। ऐसी स्थिति सामान्यतः 3 जनवरी को होती है।
- **अपसौर (Aphelion) :** पृथ्वी जब सूर्य से अधिकतम दूरी पर होती है तो इसे अपसौर कहते हैं। ऐसी स्थिति सामान्यतः 4 जुलाई को होती है।
- पृथ्वी के परिक्रमण के फलस्वरूप विभिन्न ऋतुओं का बनना सम्भव हो पाता है।

3. दिन रात का छोटा व बड़ा होना

- यदि पृथ्वी अपनी धुरी पर झुकी हुई न होती तो सर्वत्र दिन-रात बराबर होते। इसी प्रकार यदि पृथ्वी सूर्य की परिक्रमा न करती तो एक गोलार्द्ध में दिन सदा ही बड़े और रातें छोटी रहती जबकि दूसरे गोलार्द्ध में रातें बड़ी और दिन छोटे होते, परंतु विषुवत्रेखीय भाग को छोड़कर विश्व के अन्य सभी भागों में विभिन्न ऋतुओं में दिन-रात की अवधि में अंतर पाया जाता है।
- विषुवत रेखा पर सदैव दिन-रात बराबर होते हैं, क्योंकि इसे प्रकाश वृत्त हमेशा दो बराबर भागों में बाँटता है। अतः विषुवत् रेखा का आधा भाग प्रत्येक स्थिति में प्रकाश प्राप्त करता है।

पृथ्वी पर दिन और रात की स्थिति

- 21 मार्च से 23 सितम्बर की अवधि में उत्तरी गोलार्द्ध सूर्य का प्रकाश 12 घंटे या उससे अधिक समय तक प्राप्त होता है। अतः यहाँ दिन बड़े एवं रातें छोटी होती हैं।
- जैसे-जैसे उत्तरी ध्रुव की ओर बढ़ते जाते हैं, दिन की अवधि भी बढ़ती जाती है। उत्तरी ध्रुव पर तो दिन की अवधि छः महीने की होती है।
- 23 सितम्बर से 21 मार्च तक सूर्य का प्रकाश दक्षिणी गोलार्द्ध में 12 घंटे या उससे अधिक समय तक प्राप्त होता है।
- जैसे-जैसे दक्षिणी ध्रुव की ओर बढ़ते हैं, दिन की अवधि भी बढ़ती जाती है। दक्षिणी ध्रुव पर इसी कारण छः महीने तक दिन रहता है। इस प्रकार उत्तरी ध्रुव एवं दक्षिणी ध्रुव दोनों पर ही छः महीने तक दिन व छः महीने तक रात रहती है।

ऋतु परिवर्तन

- पृथ्वी न केवल अपने अक्ष पर घूमती है वरन् सूर्य की परिक्रमा भी करती है। अतः पृथ्वी की सूर्य से सापेक्ष स्थितियाँ बदलती रहती हैं।
- पृथ्वी के परिक्रमण में चार मुख्य अवस्थाएँ आती हैं तथा इन अवस्थाओं में परिवर्तन से ऋतु परिवर्तन होते हैं।
- **21 जून की स्थिति** - इस समय सूर्य कर्क रेखा पर लम्बवत् चमकता है। इस स्थिति को ग्रीष्म अयनांत (Summer Solstice) कहते हैं।
- 21 मार्च के बाद सूर्य उत्तरायण होने लगता है तथा उत्तरी गोलार्द्ध में दिन की अवधि बढ़ने लगती है, जिससे वहाँ ग्रीष्म ऋतु का आगमन होता है।
- 21 जून को उत्तरी गोलार्द्ध में दिन की अवधि सबसे अधिक रहती है। दक्षिणी गोलार्द्ध में इस समय शीत ऋतु होती है। 21 जून के पश्चात् इन 23 सितम्बर तक सूर्य पुनः विषुवत रेखा की ओर उन्मुख होता है। परिणामस्वरूप धीरे-धीरे उत्तरी गोलार्द्ध में गर्मी कम होने लगती है।
- **22 दिसम्बर की स्थिति** - इस समय सूर्य मकर रेखा पर लम्बवत् चमकता है, इस स्थिति को शीत अयनांत (Winter Solstice) कहते हैं।
- इस समय दक्षिणी गोलार्द्ध में दिन की अवधि लम्बी व रातें छोटी होती हैं। वस्तुतः सूर्य के दक्षिणायन होने अर्थात् दक्षिणी गोलार्द्ध में उन्मुख होने की प्रक्रिया 23 सितम्बर के बाद प्रारंभ हो जाती है, जिससे दक्षिणी गोलार्द्ध में दिन बड़े व रातें छोटी होने लगती हैं। इस समय उत्तरी गोलार्द्ध - में ठीक विपरीत स्थिति देखी जाती है।
- 22 दिसम्बर से उपरान्त 21 मार्च तक सूर्य पुनः विषुवत रेखा की ओर उन्मुख होता है तथा दक्षिणी गोलार्द्ध में धीरे-धीरे ग्रीष्म ऋतु की समाप्ति हो जाती है।

21 मार्च व 23 सितम्बर की स्थितियाँ -

- इन दोनों स्थितियों में सूर्य विषुवत रेखा पर लम्बवत चमकता है। अतः इस समय समस्त अक्षांश रेखाओं का आधा भाग सूर्य का प्रकाश प्राप्त करता है। अतः सर्वत्र दिन व रात की अवधि बराबर होती है।
- इस समय दिन व रात की अवधि के बराबर रहने एवं ऋतु की समानता के कारण इन दोनों स्थितियों को विषुव (Equinox) कहा जाता है।
- 21 मार्च की स्थिति को बसंत विषुव (Spring Equinox) एवं 23 सितम्बर वाली स्थिति को शरद विषुव (Autumn Equinox) कहा जाता है।
- पृथ्वी की सतह पर किसी भी बिन्दु या स्थान की स्थिति अक्षांश व देशान्तर के द्वारा निर्धारित की जाती हैं।
- अक्षांश व देशान्तर वे कल्पित रेखाएँ हैं जो पृथ्वी पर किसी स्थान की स्थिति का निर्धारण करती है। अक्षांशों व देशान्तरों को अंश (डिग्री) में मापते हैं, क्योंकि ये कोणीय दूरी को प्रदर्शित करते हैं।
- प्रत्येक डिग्री को 60 मिनट (') में एवं प्रत्येक मिनट को 60 सेकेंड (") में विभाजित किया जाता है।
- सभी अंक्षाशों व देशान्तरों को क्रमशः उत्तर-दक्षिण तथा पूर्व-पश्चिम में दर्शाया जाता है।
- अक्षांश व देशान्तर रेखाओं को सामान्यतः भौगोलिक निर्देशांक कहा जाता है, क्योंकि ये सभी रेखाओं के जाल (Grid) का एक तंत्र बनाती है, जिस पर हम धरातल की भिन्न-भिन्न विशेषताओं को प्रदर्शित कर सकते हैं।
- अक्षांश व देशान्तर रेखाएँ एक-दूसरे को समकोण पर काटती है।
- **अक्ष-** उत्तरी ध्रुव तथा दक्षिणी ध्रुव को एक काल्पनिक रेखा आपस में जोड़ती है, जिसके मध्य बिन्दु को 'अक्ष' कहा जाता है। यह अक्ष रेखा पृथ्वी को दो बराबर भागों में विभक्त करती है।
- **ग्रिड-** दो अंक्षाशों तथा दो देशान्तरों के मध्य स्थित भाग को ग्रिड (Grid) कहते हैं।
- पृथ्वी का एकमात्र प्राकृतिक उपग्रह चन्द्रमा है।
- उपग्रह वे आकाशीय पिंड हैं, जो अपने-अपने ग्रहों के साथ सूर्य की भी परिक्रमा करते हैं।
- चन्द्रमा सौरमंडल का पाँचवाँ सबसे बड़ा उपग्रह है।
- इसका व्यास 3475 किमी. है।

चन्द्रमा की उत्पत्ति-

- चन्द्रमा की उत्पत्ति 4.4 अरब वर्ष पहले पृथ्वी से एक पिण्ड के टकराने से हुई है, जिस प्रकार सूर्य से निकले ज्वारीय पदार्थो से ग्रहों का निर्माण हुआ उसी प्रकार उपग्रहों का निर्माण ग्रहों से निकले हुए ज्वारीय पदार्थ से हुआ।

चंद्रकलाएँ-

- बढ़ता हुआ चाँद - शुक्ल पक्ष
- घटता हुआ चाँद - कृष्ण पक्ष
- सिजिगी - सूर्य, चंद्रमा एवं पृथ्वी की एक रेखीय स्थिति सिजिगी कहलाती है, जो दो तरह से होती है-
- सूर्य-चंद्रमा-पृथ्वी = युति
- सूर्य-पृथ्वी-चंद्रमा = वियुति

चन्द्रमा तथा पृथ्वी-

- चन्द्रमा दीर्घवृत्ताकार पथ में पृथ्वी की परिक्रमा करता है।
- चन्द्रमा की परिक्रमण तथा परिभ्रमण दोनों की ही अवधि 27.32 दिन है।
- चन्द्रमा का घूर्णन तथा परिक्रमण काल एक समान होने के कारण पृथ्वी से चन्द्रमा का सदैव एक ही भाग दिखाई पड़ता है।
- पृथ्वी की सतह से एक समय में उसका केवल 59% प्रतिशत भाग ही दिखाई देता है, अत: स्पष्ट है कि चन्द्रमा का एक भाग सदैव पृथ्वी की ओर उन्मुख रहता है।

अपभू (Apogee) -

- जब चन्द्रमा पृथ्वी से अधिकतम दूरी पर होता है, तो इस स्थिति को अपभू कहते हैं, पृथ्वी से चन्द्रमा की अधिकतम दूरी 405500 किमी. आँकी गई है।

उपभू (Perigee) -

- जब चन्द्रमा पृथ्वी के सबसे नजदीक दूरी पर होता है, तो इस स्थिति को उपभू कहते हैं, पृथ्वी से चन्द्रमा की न्यूनतम दूरी 363300 किमी. आँकी गई है।

सूर्यग्रहण और चन्द्रग्रहण

- पृथ्वी और चन्द्रमा दोनों को प्रकाश सूर्य से मिलता है।
- पृथ्वी से चन्द्रमा का एक भाग ही दिखाई देता है, क्योंकि पृथ्वी और चन्द्रमा की घूर्णन गति समान है।
- पृथ्वी पर चन्द्रमा का सम्पूर्ण प्रकाशित भाग महीने में केवल एक बार अर्थात् पूर्णिमा को ही दिखाई देता है।
- इसी प्रकार महीने में एक बार चन्द्रमा का सम्पूर्ण अप्रकाशित भाग पृथ्वी के सामने होता है तथा तब चन्द्रमा दिखाई नहीं देता, इसे अमावस्या कहते हैं।

सूर्यग्रहण (Solar Eclipse)

- पृथ्वी की परिक्रमा करते हुए जब किसी अमावस्या के दिन चंद्रमा, पृथ्वी एवं सूर्य के बीच आ जाता है तो पृथ्वी पर चंद्रमा की छाया पड़ती है।
- जब सूर्य एवं पृथ्वी के बीच चन्द्रमा आ जाए तथा पृथ्वी पर सूर्य का प्रकाश न पड़कर चन्द्रमा की परछाई पड़े इस स्थिति को चन्द्रग्रहण कहते हैं।
- सूर्यग्रहण हमेशा अमावस्या को होता है।
- फलतः सूर्य का सम्पूर्ण प्रकाश पृथ्वी तक नहीं पहुँच पाता है।
- सूर्य का कुछ भाग चंद्रमा की छाया में पड़ जाता है।
- सूर्य की आकृति पर पड़ने वाली चंद्रमा की छाया सूर्य ग्रहण कहलाती है।
- जब चंद्रमा सूर्य को पूरी तरह ढक लेता है तो **पूर्ण सूर्य ग्रहण** होता है।
- जब चंद्रमा द्वारा सूर्य का कुछ अंश ही ढक पाता है तो **"आंशिक सूर्य ग्रहण"** होता है।
- सूर्य ग्रहण अमावस्या को होता है किंतु प्रत्येक अमावस्या को नहीं होता है।

चंद्र ग्रहण (Lunar Eclipse)

- चंद्रमा के प्रकाशित भाग के ढक जाने को चंद्र ग्रहण कहते हैं। इसका कारण चंद्रमा, पृथ्वी एवं सूर्य की सापेक्ष स्थिति है।

- जब पृथ्वी, सूर्य और चन्द्रमा के बीच आ जाती है तो सूर्य की रोशनी चन्द्रमा तक नहीं पहुँच पाती है तथा पृथ्वी की छाया के कारण उस पर अंधेरा छा जाता है, इस स्थिति को चन्द्रग्रहण कहते हैं।
- चन्द्रग्रहण हमेशा पूर्णिमा की रात को होता है।
- पूर्णिमा के दिन सूर्य, पृथ्वी एवं चंद्रमा तीनों एक सीध में होते हैं किंतु हर पूर्णिमा को चंद्र ग्रहण नहीं होता है।
- इसका कारण यह है कि चंद्रमा और पृथ्वी के कक्ष तल भिन्न-भिन्न हैं।
- चंद्रमा की कक्षा पृथ्वी की कक्षा को दो स्थानों पर काटती है। केवल इन दो पात बिंदुओं (nodes) पर ही जब चंद्रमा आता है तब उस पूर्णिमा के दिन चंद्र ग्रहण होता है। यह वियुति (opposition) की स्थिति होती है।
- पूरा चन्द्रमा ढक जाने पर पूर्ण चंद्रग्रहण होता है।
- आंशिक ढक जाने पर आंशिक चंद्रग्रहण होता है।
- चन्द्रग्रहण हमेशा पूर्णिमा के दिन होता है, जब पृथ्वी सूर्य तथा चन्द्रमा एक सीधी रेखा में होते हैं। इस अवस्था को सिजगी (Syzyay) अर्थात् युति-वियुति कहते हैं।

  नोट - पूर्णिमा व अमावस्या के दिन ही वृहत्/ दीर्घ ज्वार उत्पन्न होते हैं। ऐसी स्थिति पृथ्वी, चन्द्रमा व सूर्य के एक रेखा में होने से होती है।
- सूर्य, पृथ्वी तथा चन्द्रमा शुक्ल पक्ष तथा कृष्ण की सप्तमी/ अष्टमी को समकोण की स्थिति में होते हैं। इसी स्थिति में लघु/ निम्न ज्वार की उत्पत्ति होती है। ये ज्वार साधारण ज्वार की अपेक्षा 20% कम ऊँचे होते हैं।

नोट :-

- पृथ्वी तथा चन्द्रमा की औसत दूरी 3,84000 किमी. है।
- चन्द्रमा का स्वयं का कोई प्रकाश नहीं है।
- चन्द्रमा का गुरुत्वाकर्षण बल पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण बल का 1\6 होता है।
- पृथ्वी पर सूर्य की तुलना चन्द्रमा का आकर्षण बल 2.2 गुणा (लगभग) अधिक लगता है।
- चन्द्रमा का व्यास पृथ्वी के व्यास का 1\4 है।
- चन्द्रमा की सतह पर 85%भाग पठारीय है तथा 15% भाग मैदानी है।
- **ब्लू मून (Blue moon)** – एक कैलेण्डर माह में दो पूर्णिमा होने की स्थिति 'ब्लू मून' कहलाती है। यह एक खगोलीय परिघटना है, जो एक सौर वर्ष में 12 चंद्र माहों से कुछ अधिक दिन होने के कारण घटित होती है।
- एक चंद्र माह लगभग 29.5 दिन का होता है, ऐसा 3 वर्ष में एक बार होता है।
- ज्वार भाटे की उत्पत्ति के लिए चन्द्रमा का आकर्षण बल भी जिम्मेदार होता है।
- भारत द्वारा अक्टूबर 2008 में प्रक्षेपित चन्द्रयान-1 की खोज से चन्द्रमा की सतह पर जल की मौजूदगी के ठोस प्रमाण प्राप्त हुए हैं।
- एक कैलेण्डर वर्ष में अधिकतम 7 ग्रहण (सूर्य ग्रहण/चन्द्रग्रहण) हो सकते हैं।

अक्षांश रेखा

- विषुवत रेखा को आधार मानकर उसके उत्तर या दक्षिण में मापी गई कोणीय दूरी को 'अक्षांश' कहते हैं तथा समान अंक्षाशों को मिलाने वाली काल्पनिक रेखा को अक्षांश रेखा कहते हैं।
- सभी अक्षांश रेखाएँ विषुवत रेखा के समानांतर खींची गई क्षैतिज रेखाएँ होती हैं।
- ग्लोब पर अक्षांश समांतर वृत्त के समान प्रतीत होते हैं।
- दो अंक्षाशों के बीच की दूरी 111 किमी. होती है।
- विषुवत रेखा से उत्तर व दक्षिण तक 0° से 90° तक अक्षांश रेखाएँ होती है।
- विषुवत रेखा से ध्रुवों की ओर जाने पर अक्षांश रेखाओं का आकार क्रमश: घटता जाता है, जो दोनों ध्रुवों पर बिंदु में परिवर्तित हो जाती है, इसलिए अक्षांश तो 181 माने जाते हैं लेकिन अक्षांश रेखाएँ 179 ही मानी जाती है।
- 90° अक्षांश को छोड़कर प्रत्येक अक्षांश रेखा एक सपूर्ण वृत्त होती है।
- दो अंक्षाशों के बीच की दूरी को कटिबन्ध कहते हैं।
- विषुवत रेखा के उत्तर के अंक्षाशों को 'उत्तरी अक्षांश' तथा दक्षिण के अंक्षाशों को 'दक्षिणी अक्षांश' लिखते हैं।
- अंक्षाशों का उपयोग पृथ्वी पर स्थित तापमंडलों अथवा ताप कटिबन्धों का निर्धारण करना है।

प्रमुख अक्षांश रेखाएँ-

1. विषुवत् रेखा (भूमध्य रेखा) -

- ग्लोब अथवा पृथ्वी के दोनों ध्रुवों के बीच स्थित काल्पनिक रेखा जो पृथ्वी को दो बराबर भागों में विभाजित करती है। यही विषुवत या भूमध्य रेखा कहलाती है। इसे 0° से दर्शाया जाता है। इसके उत्तर में उत्तरी ध्रुव तक के भाग को उत्तरी गोलार्द्ध तथा दक्षिणी में दक्षिणी ध्रुवों तक के भाग को दक्षिण गोलार्द्ध कहा जाता है।
- विषुवत रेखा पर सूर्य की किरणें पूरे वर्ष लगभग लंबवत पड़ती है। अत: यहाँ दैनिक तथा वार्षिक तापांतर भी वर्षभर उच्च बना रहता है।
- यहाँ दिन व रात की अवधि समान बनी रहती है तथा वर्ष में दो बार 21 मार्च तथा 23 सितंबर को सूर्य लबंवत् चमकता है।
- भूमध्य रेखा तीन महाद्वीपों एशिया, अफ्रीका तथा दक्षिण अमेरिका से गुजरती है।
- भूमध्य रेखा को कांगो (जायरे) नदी दो बार काटती है।
- भूमध्य रेखा दक्षिणी पूर्वी एशिया के इण्डोनेशिया तथा दक्षिण में मालदीव के द्वीपों से गुजरती है।
- अफ्रीका महाद्वीप में गैबोन, कांगो, कांगो गणराज्य (जायर), युगांडा, केन्या तथा सोमालिया देशों से गुजरती है।
- दक्षिणी अमेरिका महाद्वीप के ब्राजील, कोलंबिया तथा इक्वेडोर और गालापगॉस द्वीप (इक्वेडोर) से गुजरती है।

2. कर्क रेखा-

- भूमध्य रेखा के उत्तर में $23\frac{1}{2}^{\circ}$ कोणीय दूरी पर यह रेखा स्थित है।

- यह रेखा भारत के 8 राज्यों से गुजरती है तथा भारत की जलवायु को दो भागों में बाँटती है। वे राज्य है - गुजरात, राजस्थान, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखण्ड, पश्चिम बंगाल, त्रिपुरा, मिज़ोरम।
- कर्क रेखा को अरब सागरीय अपवाह की माही नदी (राजस्थान) दो बार काटती है।
- कर्क रेखा एशिया, अफ्रीका तथा लेटिन अमेरिका से होकर गुजरती है।
- कर्क रेखा एशिया के सऊदी अरब, संयुक्त अरब अमीरात, ओमान, भारत, बांग्लादेश, म्यांमार, चीन, वियतनाम तथा ताइवान देशों से गुजरती है।
- अफ्रीका महाद्वीप के मॉरिटानिया, पश्चिमी सहारा, माली, अल्जीरिया तथा लीबिया देशों से गुजरती है।
- उत्तरी अमेरिका के मेक्सिको तथा मध्य अमेरिका के द्वीपों से गुजरती है।

3. मकर रेखा-

- विषुवत रेखा से दक्षिण की 23 $\frac{1}{2}^{\circ}$ कोणीय दूरी मकर रेखा को दर्शाती है।
- मकर रेखा को लिम्पोपो नदी (मोजाम्बिक, बोत्सवाना, दक्षिण अफ्रीका) दो बार काटती है।
- मकर रेखा ऑस्ट्रेलिया, अफ्रीका तथा दक्षिण अमेरिका महाद्वीप से गुजरती है।
- मकर रेखा ऑस्ट्रेलिया महाद्वीप के मध्य से गुजरती है।
- अफ्रीका के नामीबिया, बोत्सवाना, दक्षिण अफ्रीका तथा मोजाम्बिक से गुजरती है।
- दक्षिण अमेरिका के चिली, अर्जेन्टीना, पराग्वे तथा ब्राजील देशों से गुजरती है।

4. आकृटिक वृत्त (Arctic circle)-

- विषुवत रेखा के उत्तर में 66 $\frac{1}{2}^{\circ}$ की कोणीय दूरी को आकृटिक वृत्त के रूप में दर्शाते है।
- यहाँ पर सूर्य की किरणों का तिरछापन ज्यादा रहता है।
- इस वृत्त से शीत कटिबन्ध का आरम्भ हो जाता है।
- यह वृत्त अलास्का (USA), कनाडा, ग्रीनलैण्ड (डेनमार्क), नार्वे, स्वीडन, फिनलैण्ड तथा रूस देशों से गुजरती है।

5. अंटार्कटिक वृत्त (Antartic Circle)-

- विषुवत रेखा से दक्षिण में $66\frac{1}{2}^{\circ}$ की कोणीय दूरी को अंटार्कटिक वृत्त के रूप में दर्शाया जाता है।
- यह वृत्त पूर्णत: अटार्कटिक महाद्वीप के चारों ओर विस्तृत है। यहाँ प्रमुख देशों के अनुसंधान संस्थान स्थित है।
- यहाँ पर सूर्य की किरणों का तिरछापन ज्यादा रहता है तथा शीत कटिबंध का आरम्भ भी हो जाता है।
- यहाँ महाद्वीपीय धरातल का अभाव पाया जाता है क्योंकि यह वर्षभर बर्फ से ढका रहता है।

देशांतर (Longitude)

- उत्तरी तथा दक्षिणी ध्रुव की ओर प्रधान मध्याह्न रेखा के समानांतर पूर्व या पश्चिम में खींची गई रेखाएँ देशान्तर रेखा कहलाती है।
- ये रेखाएँ पृथ्वी के दोनों ध्रुवों के सहारे अर्धवृत्तों का निर्माण करती है।
- देशान्तर रेखा की संख्या 360 होती है। 0° प्रधान याम्योत्तर के पूर्व में 180 तथा पश्चिम में 180 देशान्तर रेखाएँ होती है।
- इंग्लैण्ड के ग्रीनविच नामक स्थान से गुजरने वाली रेखा को 0° देशान्तर रेखा कहा जाता है। यह पृथ्वी को पूर्वी तथा पश्चिमी गोलार्द्धों में विभाजित करती है।
- 180° पूर्वी देशान्तर तथा 180° पश्चिमी देशान्तर दोनों एक ही रेखा है।
- देशान्तर रेखाओं से विश्व समय की गणना की जाती है।
- विषुवत रेख पर दो देशान्तरों के मध्य की दूरी 111.32 किमी. है जो दोनों ध्रुवों की ओर जाने पर क्रमश: घटती जाती है।
- दो देशान्तर रेखाओं के बीच की दूरी को "गोरे" कहा जाता है।

देशान्तर एवं समय-

- चूँकि पृथ्वी 24 घण्टे में 360° घूमती है। इसलिए 1° देशान्तर की दूरी तय करने में पृथ्वी को 4 मिनट का समय लगता है।
- भारतीय समय अन्तर्राष्ट्रीय समय से 5:30 घण्टे आगे रहता है, क्योंकि भारत का मानक समय $82\frac{1}{2}^{\circ}$ पूर्वी देशांतर से लिया गया है।

अन्तर्राष्ट्रीय तिथि रेखा (International Date Line)-

- ग्लोब पर ग्रीनविच के एकदम पीछे 180° देशान्तर रेखा को अन्तर्राष्ट्रीय तिथि रेखा कहा जाता है।
- यह रेखा सीधी नहीं है इसे मुख्यत: तीन जगह से मोड़ा गया है क्योंकि यह प्रशान्त महासागर के कई ऐसे द्वीपों से गुजरती है जो एक ही प्रान्त या राज्य के अधीन है। अत: उनमें अलग-अलग समय न हो, इसलिए इसे आवश्यकतानुसार मोड़ा गया है।
- साइबेरिया और अलास्का के बीच बेरिंग जलडमरूमध्य में इसे पूर्व की मोड़ा गया है।
- एल्यूशियन द्वीप समूह को बचाने के लिए इसे पश्चिम की ओर मोड़ा गया है।
- फिर दक्षिणी में फिजी व टोगा द्वीपों को बचाने के लिए इसे पुन: पूर्व फिर पश्चिम की ओर मोड़ा गया है।

स्थानीय समय-

- पृथ्वी पर प्रत्येक स्थान या देश में अपने देशांतर के अनुसार जो समय होता है, वह स्थानीय समय कहलाता है।
- स्थानीय समय की गणना सूर्य के प्रकाश या किरणों के आधार पर की जाती है।
- एक देशांतर पर एक ही समय मिलता है, जबकि पूर्व व पश्चिम के भागों में अलग-अलग समय हो सकता है।
- भारत में भी गुजरात (पश्चिम) तथा अरुणाचल प्रदेश (पूर्व) के समय में अंतराल पाया जाता है। समय का यह अन्तराल लगभग 02 घण्टे का होता है।

भारतीय संविधान एवं राजव्यवस्था

संविधान की मांग

- संविधान निर्माण की सर्वप्रथम माँग बाल गंगाधर तिलक द्वारा 1895 ई. में "स्वराज विधेयक" द्वारा की गई।
- वर्ष 1916 में होमरूल लीग आन्दोलन चलाया गया, जिसके माध्यम से अंग्रेजों से घरेलू शासन संचालन की माँग की गई।
- वर्ष 1922 में गाँधीजी ने प्रबलतम तरीके से संविधान सभा और संविधान निर्माण की माँग की।
- **नेहरू रिपोर्ट –** अगस्त, 1928 में पं. मोतीलाल नेहरू की अध्यक्षता में नेहरू रिपोर्ट (बम्बई) बनाई गई। नेहरू रिपोर्ट में ब्रिटिश भारत का पहला लिखित संविधान बनाया गया। नेहरू रिपोर्ट में मौलिक अधिकारों, अल्पसंख्यकों के अधिकारों तथा अखिल भारतीय संघ एवम् डोमिनियन स्टेट के प्रावधान रखे गए। नेहरू रिपोर्ट का मुस्लिम लीग और रियासतों के राजाओं द्वारा विरोध किया गया।
- वर्ष 1929 में जवाहर लाल नेहरू की अध्यक्षता में कांग्रेस का लाहौर अधिवेशन हुआ, जिसमें पूर्ण स्वराज्य की माँग की गई।
- वर्ष 1934 में मानवेन्द्रनाथ रॉय ने व्यक्तिगत रूप से संविधान सभा के गठन की माँग की।
- वर्ष 1936 में कांग्रेस का फैजपुर अधिवेशन आयोजित किया गया जिसमें कांग्रेस के मंच से पहली बार चुनी हुई संविधान सभा द्वारा संविधान निर्माण की माँग की गई।
- **अगस्त प्रस्ताव –** 1940 में सैद्धांतिक रूप से ब्रिटिश सरकार के द्वारा संविधान सभा की माँग स्वीकार की गई और 'अगस्त प्रस्ताव' भारत भेजा गया। लेकिन कांग्रेस एवं मुस्लिम लीग ने इसे अस्वीकार कर दिया।
- **क्रिप्स मिशन –** मार्च, 1942 में दूसरे विश्व युद्ध से उपजी परिस्थितियों के उपरान्त क्रिप्स मिशन भारत भेजा गया। क्रिप्स मिशन ने युद्ध के बाद भारत में उत्तरदायी शासन की माँग को मानने का वचन दिया, लेकिन यहाँ भी 'डोमिनियन स्टेट' अवधारणा रखी गई। इसे कांग्रेस, लीग और गाँधीजी ने नामंजूर कर दिया।
- **शिमला सम्मेलन/वेवेल योजना –** भारत में शासन की अव्यवस्था को देखते हुए तत्कालीन वायसराय लॉर्ड वेवेल ने जून, 1945 में शिमला में सर्वदलीय बैठक बुलायी जो किसी भी तार्किक नतीजे पर नहीं पहुँची। इस सम्मेलन को 'शिमला सम्मेलन' या वेवेल योजना के नाम से जाना जाता है।
- **कैबिनेट मिशन –** अंततः ब्रिटिश सरकार द्वारा मार्च, 1946 में कैबिनेट मिशन भारत भेजा गया, जिसकी अध्यक्षता 'सर पैथिक लॉरेन्स' ने की तथा दो अन्य सदस्य सर स्टेफॉर्ड क्रिप्स और ए. वी. अलेक्जेण्डर थे।

कैबिनेट मिशन योजना के अनुसार संविधान सभा का गठन

- कैबिनेट मिशन के अनुसार संविधान सभा का गठन अंशतः निर्वाचित एवं अंशतः नामित सदस्यों से होना था।
- सदस्यों का निर्वाचन अप्रत्यक्ष रूप से प्रांतों की विधायिका से होना था।
- संविधान सभा की कुल सदस्य संख्या 389 निश्चित की गई, इसमें से– 296 सदस्य ब्रिटिश भारत से जिसमें 292 ब्रिटिश प्रांतों से व 4 चीफ कमिश्नरी [अजमेर–मेरवाड़ा, दिल्ली, कुर्ग (कर्नाटक) एवं बलूचिस्तान] एवं 93 सदस्य देशी रियासतों से होंगे।
- ब्रिटिश प्रांतों से निर्वाचन हेतु निर्वाचन क्षेत्र 3 भागों में मुस्लिम, सिख और सामान्य के अंतर्गत विभाजित किए गए।
- प्रत्येक समुदाय से चुनाव के लिए आनुपातिक प्रतिनिधित्व प्रणाली एवं एकल संक्रमणीय मत पद्धति का चयन किया गया।
- सीटों का बंटवारा जनसंख्या के आधार पर किया गया। औसतन 10 लाख की जनसंख्या पर एक सीट का निर्धारण किया गया।
- देशी रियासतों के प्रतिनिधि इनके प्रमुख द्वारा नामित किये जाने थे।

संविधान सभा का गठन

- कैबिनेट मिशन योजना के अनुसार जुलाई–अगस्त, 1946 में संविधान सभा के 296 सीटों पर चुनाव हुए जिनमें से 208 सीटों पर कांग्रेस, 73 सीटों पर मुस्लिम लीग एवं 15 सीटों अन्य सदस्यों ने प्राप्त की।
- देशी रियासतों को आवंटित 93 सीटें रिक्त ही रही, क्योंकि देशी रियासतों ने खुद को संविधान सभा से अलग रखने का निर्णय किया।
- नवम्बर, 1946 को वायसराय ने संविधान सभा के गठन की घोषणा की।
- 9 दिसम्बर, 1946 को संविधान सभा की पहली बैठक हुयी ।

संविधान सभा की कार्यवाही

- 9 दिसम्बर, 1946 को संविधान सभा की पहली बैठक हुई। मुस्लिम लीग ने बहिष्कार किया।
- प्रथम बैठक में कुल 207 सदस्य उपस्थित हुए जिनमें 10 महिलाएं शामिल थी।
- प्रथम बैठक में ही आचार्य कृपलानी के प्रस्ताव पर डॉ. सच्चिदानंद सिन्हा को संविधान सभा का अस्थायी अध्यक्ष नियुक्त किया गया।
- 11 दिसम्बर, 1946 को डॉ. राजेन्द्र प्रसाद को सर्वसम्मति से संविधान सभा का स्थायी अध्यक्ष चुना गया।
- संविधान सभा के उपाध्यक्ष एस.सी. मुखर्जी (ब्रिटिश भारत के) एवं वी.टी. कृष्णमाचारी (देशी रियासतों के) को बनाया गया।
- संविधान सभा के संवैधानिक सलाहकार बी.एन. राव एवं सचिव एच.वी.आर. आयंगर बनाए गए।

दल	**सीटें**
भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस	208
मुस्लिम लीग	73
अनुसूचित जाति फेडरेशन	1
कृषक प्रजा पार्टी	1
यूनियनिस्ट पार्टी	1
यूनियनिस्ट अनुसूचित जाति	1
यूनियनिस्ट मुस्लिम	1
कम्युनिस्ट पार्टी	1
गैर–कांग्रेसी सिख	1
स्वतंत्र	8
कुल	**296**

समुदाय	सीटें
हिन्दू	163
मुस्लिम	80
अनुसूचित जाति	31
पिछड़ी जनजातियाँ	6
भारतीय ईसाई	6
सिख	4
एंग्लो–इंडियन	3
पारसी	3
कुल	**296**

– विभाजन के पश्चात् संविधान सभा के सीटों की स्थिति–

प्रांत	सीटें
भारतीय प्रांत	229
देशी रियासतें	70
कुल	**299**

उद्देश्य प्रस्ताव (Objective Resolution)

– 13 दिसंबर, 1946 को पंडित जवाहर लाल नेहरू के द्वारा संविधान सभा में उद्देश्य प्रस्ताव प्रस्तुत किया गया।
– संविधान सभा के द्वारा 22 जनवरी, 1947 को उद्देश्य प्रस्ताव को पारित किया गया।
– उद्देश्य प्रस्ताव में उल्लेख था कि भारत एक स्वतंत्र एवं संप्रभु गणराज्य है।
– संप्रभु एवं स्वतंत्र भारत तथा इसके संविधान की समस्त शक्तियाँ सत्ता का स्रोत भारत की जनता है।
– भारत के सभी नागरिकों के लिए सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक न्याय, प्रतिष्ठा एवं अवसर एवं कानून के समक्ष समता तथा कानून और सार्वजनिक नैतिकता की सीमाओं में रहते हुए वाक्, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म, उपासना, व्यवसाय, संगठन और कार्य करने की मौलिक स्वतंत्रता की गारंटी व सुरक्षा दी जाएगी।

संविधान सभा में 15 महिला सदस्य थी जो निम्न है–

– 1. सरोजिनी नायडू
2. सुचेता कृपलानी
3. राजकुमारी अमृता कौर
4. विजयलक्ष्मी पंडित
5. हंसा मेहता
6. दुर्गाबाई देशमुख
7. रेणुका रे
8. कमला चौधरी
9. दक्षिणायनी वेलायुदन
10. मालती चौधरी
11. पूर्णिमा बनर्जी
12. एनी मस्करीन (मनोनीत)
13. अम्मू स्वामीनाथन
14. लीला रॉय
15. बेगम एजाज रसूल (मुस्लिम सदस्य)

संविधान सभा की समितियाँ

– संविधान सभा ने संविधान के निर्माण से संबंधित कई समितियों का गठन किया।
– इनमें से 8 बड़ी समितियाँ थीं तथा अन्य छोटी।

समितियाँ के अध्यक्ष –

– 1. संघ शक्ति समिति – जवाहरलाल नेहरू।
2. संघीय संविधान समिति – जवाहरलाल नेहरू।
3. प्रांतीय संविधान समिति – सरदार पटेल।
4. प्रारूप समिति – डॉ. बी.आर. अम्बेडकर।
5. मौलिक अधिकारों एवं अल्पसंख्यकों संबंधी परामर्श समिति – सरदार पटेल। इसमें दो उप समितियाँ थी–
a. मौलिक अधिकार उप समिति – जे.बी. कृपलानी।
b. अल्पसंख्यक उप समिति – एच.सी. मुखर्जी।
6. प्रक्रिया नियम समिति – डॉ. राजेन्द्र प्रसाद।
7. राज्यों के लिये समिति (राज्यों से समझौता करने वाली) – जवाहर लाल नेहरू।
8. संचालन समिति – डॉ. राजेन्द्र प्रसाद।

छोटी समितियाँ –

– 1. संविधान सभा के कार्यों संबंधी समिति – जी.वी. मावलंकर।
2. कार्य संचालन समिति – डॉ. के.एम. मुंशी।
3. सदन समिति – बी. पट्टाभिसीतारमैय्या।
4. राष्ट्र ध्वज संबंधी तदर्थ समिति – डॉ. राजेन्द्र प्रसाद।
5. प्रारूप संविधान की जाँच करने वाली समिति – जवाहर लाल नेहरू।
6. वित्त एवं स्टाफ समिति – डॉ. राजेन्द्र प्रसाद।

प्रारूप समिति (Drafting Committee) –

– इस समिति का गठन 29 अगस्त, 1947 को हुआ था।
– 30 अगस्त, 1947 को प्रारूप समिति की प्रथम बैठक हुई एवं इसी बैठक में डॉ. बी.आर. अंबेडकर को अध्यक्ष बनाया गया।
– इस समिति में सात सदस्य थे–
1. डॉ. बी.आर. अंबेडकर (अध्यक्ष)
2. एन. गोपाल स्वामी आयंगर।
3. अल्लादी कृष्ण स्वामी अय्यर।
4. डॉ. के.एम. मुंशी।
5. सैयद मोहम्मद सादुल्ला।
6. एन. माधव राव (बी.एल. मित्र के त्याग–पत्र के पश्चात्)
7. टी.टी. कृष्णामाचारी (डी.पी. खेतान की मृत्यु के पश्चात्)

भारतीय संविधान सभा ने दो प्रकार से कार्य किया–

(1) जब संविधान निर्माण का कार्य किया जाता तो इसकी अध्यक्षता राजेन्द्र प्रसाद करते थे।
(2) जब संविधान सभा विधायिका के रूप में कार्य करती है तो अध्यक्षता गणेश वासुदेव मावलंकर द्वारा की जाती थी।
– संविधान पर 284 लोगों ने हस्ताक्षर किए। हस्ताक्षर करने वाला पहले व्यक्ति जवाहर लाल नेहरू थे।
– राजस्थान से हस्ताक्षर करने वाले पहले व्यक्ति बलवंत सिंह मेहता थे।
– राजस्थान से संविधान सभा में 12 सदस्य भेजे गए थे, जिसमें से 11 सदस्य देशी रियासतों से तथा 1 चीफ कमीश्नरी अजमेर–मेरवाड़ा क्षेत्र से था।

- डॉ. बी.आर. अंबेडकर ने सभा में 4 नवंबर, 1948 को संविधान का अंतिम प्रारूप पेश किया।
- संविधान के प्रारूप पर पेश इस प्रस्ताव को 26 नवंबर, 1949 को पारित कर दिया गया और इस पर अध्यक्ष व सदस्यों के (284 सदस्य) हस्ताक्षर लिए गए।
- 26 नवम्बर, 1949 को संविधान के 16 अनुच्छेद जिसमें नागरिकता, अन्तरिम संसद तथा संक्रमणकालीन उपबंध लागू किए गए।
- 26 नवंबर, 1949 को नागरिकता, चुनाव, तदर्थ संसद, अस्थायी व परिवर्तनशील नियम तथा छोटे शीर्षकों से जुड़े कुछ प्रावधान अनुच्छेद 5, 6, 7, 8, 9, 60, 324, 366, 367, 379, 380, 388, 391, 392, 393 और 394 स्वतः ही लागू हो गए।
- सभा में कुल 299 सदस्यों में से उस दिन केवल 284 सदस्य उपस्थित थे, जिन्होंने संविधान पर हस्ताक्षर किए।
- 26 नवंबर, 1949 को अपनाए गए संविधान में प्रस्तावना, 395 अनुच्छेद और 8 अनुसूचियाँ थीं।
- 24 जनवरी, 1950 को अन्तिम बैठक बुलाई गई जिसमें डॉ. राजेन्द्र प्रसाद को भारत का राष्ट्रपति चुना गया तथा राष्ट्रीय गीत और राष्ट्रगान को अपनाया गया।
- संविधान के शेष प्रावधान 26 जनवरी, 1950 को लागू हुए। इस दिन को संविधान की शुरुआत के दिन के रूप में देखा जाता है और इसे गणतंत्र दिवस के रूप में मनाया जाता है।
- सम्पूर्ण संविधान 26 जनवरी, 1950 को लागू किया गया।
- प्रस्तावना को पूरे संविधान को लागू करने के बाद लागू किया गया।

राष्ट्रगान

- रवीन्द्र नाथ टैगोर द्वारा पहली बार 1911 के कलकत्ता अधिवेशन में गाया गया। अवधि – लगभग 52 सैकण्ड।
- रचना – मूल बांग्ला भाषा में।
- 24 जनवरी, 1950 को राष्ट्रीय गान को अपनाया।

राष्ट्रीय गीत

- यह मूलतः संस्कृत भाषा में है तथा बंकिम चन्द्र चटर्जी द्वारा रचित आनन्द मठ से लिया गया था।
- 24 जनवरी, 1950 को राष्ट्रीय गीत को अपनाया गया।

संविधान सभा के अन्य तथ्य

- इसने 16 मई, 1949 में राष्ट्रमंडल में भारत की सदस्यता का सत्यापन किया।
- संविधान सभा द्वारा 22 जुलाई, 1947 को राष्ट्रीय ध्वज को अपनाया गया।
- 14 सितम्बर, 1949 को हिन्दी को राजभाषा के रूप में स्वीकृत किया गया।
- भारतीय संविधान को बनने में 2 वर्ष 11 माह और 18 दिन का समय लगा तथा लगभग 64 लाख रुपये खर्च हुए।

अभ्यास प्रश्न

1. संविधान सभा की प्रारूप समिति के गठन का प्रस्ताव किसने रखा था?
(a) डॉ. बी. आर. अंबेडकर
(b) डॉ. राजेंद्र प्रसाद
(c) सत्यनारायण सिन्हा
(d) पंडित जवाहर लाल नेहरू

2. भारतीय संविधान के निर्माण के समय संवैधानिक सलाहकार कौन थे?
(a) डॉ. बी.आर. अंबेडकर
(b) डॉ. राजेंद्र प्रसाद
(c) बी.एन. राव
(d) के. एम. मुंशी

3. भारत सरकार द्वारा राजकीय चिह्न कब अंगीकृत किया गया था?
(a) 15 अगस्त, 1948
(b) 2 अक्टूबर, 1947
(c) 26 जनवरी, 1948
(d) 26 जनवरी, 1950

4. भारतीय मूल संविधान में शामिल थे–
(a) 395 अनुच्छेद, 22 भाग एवं 8 अनुसूचियाँ
(b) 371 अनुच्छेद, 21 भाग एवं 11 अनुसूचियाँ
(c) 372 अनुच्छेद, 20 भाग एवं 7 अनुसूचियाँ
(d) 380 अनुच्छेद, 23 भाग एवं 8 अनुसूचियाँ

5. भारतीय संविधान सभा में कुल कितनी महिला सदस्याएँ थी?
(a) 15
(b) 13
(c) 12
(d) 10

6. भारतीय संविधान के प्रारूप समिति की अध्यक्षता निम्नलिखित में से किसने की थी?
(a) डॉ. बी. आर. अंबेडकर
(b) पंडित जवाहरलाल नेहरू
(c) सर बी. एन. राव
(d) सरदार पटेल

7. भारतीय संविधान सभा की पहली बैठक कब हुई थी?
(a) 26 जनवरी, 1950 को
(b) 15 अगस्त, 1947 को
(c) 9 दिसंबर, 1946 को
(d) 19 नवंबर, 1946 को

8. प्रारूप समिति में निम्नलिखित में से कौन एक सदस्य सम्मिलित नहीं था?
(a) जवाहरलाल नेहरू
(b) मोहम्मद सादुल्लाह
(c) ए.के. अय्यर
(d) के.एम. मुंशी

9. संविधान सभा में भारतीय संविधान का तृतीय वाचन कब प्रारंभ हुआ था?
(a) 17 नवम्बर, 1949
(b) 14 नवम्बर, 1948
(c) 25 नवम्बर, 1948
(d) 25 नवम्बर, 1949

10. सूची-I को सूची-II के साथ सुमेलित कीजिये और सूचियों के नीचे दिये गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिये:

सूची-I	सूची-II
A. राजेंद्र प्रसाद	1. सदस्य प्रारूपण समिति
B. टी.टी. कृष्णमाचारी	2. अध्यक्ष, संविधान सभा
C. एच.सी. मुखर्जी	3. अध्यक्ष, प्रारूपण समिति
D. बी.आर. अंबेडकर	4. उपाध्यक्ष, संविधान सभा

कूट-

	A	B	C	D
(a)	2	1	4	3
(b)	2	4	1	3
(c)	3	4	1	2
(d)	3	1	4	2

11. भारतीय संविधान सभा का गठन किया गया था-
(a) भारत सरकार अधिनियम, 1935 के अंतर्गत
(b) क्रिप्स योजना, 1942 के अंतर्गत
(c) कैबिनेट मिशन योजना, 1946 के अंतर्गत
(d) भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम, 1947 के अंतर्गत

12. भारत के संविधान का प्रारूप तैयार करने वाली संविधान सभा के सदस्यों को-
(a) ब्रिटिश संसद द्वारा नामित किया गया।
(b) गवर्नर-जनरल द्वारा नामित किया गया।
(c) विभिन्न प्रांतों की विधान सभाओं द्वारा चुना गया।
(d) राष्ट्रीय कांग्रेस और मुस्लिम लीग द्वारा चुना गया।

13. संविधान सभा के अस्थायी अध्यक्ष कौन थे?
(a) डॉ. राजेंद्र प्रसाद
(b) जवाहरलाल नेहरू
(c) डॉ. सच्चिदानंद सिन्हा
(d) बी. आर. अंबेडकर

14. भारतीय संविधान को अंगीकृत कब किया गया?
(a) 15 अगस्त, 1947
(b) 26 नवंबर, 1949
(c) 26 जनवरी, 1950
(d) 9 दिसंबर, 1946

15. संविधान सभा में कितने सदस्यों को चुना गया था?
(a) 300
(b) 389
(c) 250
(d) 400

16. भारतीय संविधान का प्रारूपण कितने दिनों में पूरा हुआ?
(a) 2 साल 11 महीने 18 दिन
(b) 1 साल 6 महीने 25 दिन
(c) 3 साल 2 महीने 10 दिन
(d) 2 साल 5 महीने 15 दिन

17. संविधान सभा की मसौदा समिति का गठन कब किया गया था?
(a) 29 अगस्त, 1947
(b) 9 दिसंबर, 1946
(c) 26 जनवरी, 1947
(d) 15 अगस्त, 1947

18. संविधान सभा में भारतीय संविधान को कितनी बार पढ़ा गया?
(a) 1
(b) 2
(c) 3
(d) 4

19. संविधान सभा का अंतिम सत्र कब हुआ?
(a) 15 अगस्त, 1947
(b) 24 जनवरी, 1950
(c) 26 जनवरी, 1950
(d) 26 नवंबर, 1949

20. भारतीय संविधान के निर्माण के समय संविधान सभा की कुल कितनी समितियाँ थीं?
(a) 7
(b) 11
(c) 13
(d) 22

ANSWER KEY				
1. [c]	2. [c]	3. [d]	4. [a]	5. [a]
6. [a]	7. [c]	8. [a]	9. [a]	10. [a]
11. [c]	12. [c]	13. [c]	14. [b]	15. [b]
16. [a]	17. [a]	18. [c]	19. [b]	20. [d]

♦ ♦ ♦ ♦

भारतीय अर्थव्यवस्था

उद्देश्य

- भारतीय अर्थव्यवस्था के तीन मुख्य क्षेत्रक जिनके माध्यम से लोग अपनी जीविका अर्जित करते हैं;
- अर्थव्यवस्था में प्रत्येक क्षेत्रक की भूमिका और महत्व;
- इन क्षेत्रकों का आपसी सहसंबंध;
- लोगों द्वारा अपनाए जाने वाले व्यवसायों के प्रकार।

अर्थव्यवस्था के तीन मुख्य क्षेत्रकों में वर्गीकृत किया जाता है:

1. प्राथमिक क्षेत्रक
2. द्वितीयक क्षेत्रक
3. तृतीयक क्षेत्रक

प्राथमिक क्षेत्रक

- भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले लोग अपनी जीविका मुख्य रूप से प्राकृतिक संसाधनों पर आधारित गतिविधियों से कमाते हैं। इनमें से अधिकांश लोग कृषि कार्य में संलग्न हैं, जिसे हम कृषि कहते हैं।
- कृषि में कार्य करने वालों को कृषक या कृषि श्रमिक कहा जाता है। विभिन्न प्रकार की फसलें उगाते हैं, जिन्हें दो श्रेणियों में बांटा जा सकता है:

  1. खाद्यान्न: अनाज (गेहूं, चावल), दालें, फल और सब्जियां।

  2. गैर-खाद्य फसलें: कपास, जूट और तिलहन।
- इसके अलावा, ग्रामीण क्षेत्रों में लोग अन्य गतिविधियों के माध्यम से भी आजीविका अर्जित करते हैं:
- **वानिकी:** इसमें वन उत्पादों जैसे इमारती लकड़ी, ईंधन की लकड़ी, जड़ी-बूटियां और औषधीय पौधों को एकत्र कर बाजार में बेचना शामिल है।
- **खनन:** कुछ लोग खनिजों को निकालने के लिए खानों में काम करते हैं।
- **पशुपालन:** इसमें मुर्गीपालन, दुग्ध उत्पादन और अन्य पशुधन से संबंधित गतिविधियां शामिल हैं।
- **मत्स्यपालन:** लोग तालाबों, नदियों या समुद्र से मछलियां पकड़कर बाजार में बेचते हैं।
- ये सभी गतिविधियां—कृषि, वानिकी, खनन, पशुपालन और
- मत्स्यपालन—एक-दूसरे की पूरक हैं और इन्हें प्राथमिक क्षेत्रक के अंतर्गत वर्गीकृत किया जाता है।
- **इस क्षेत्रक में शामिल हैं:**

  1. कृषि और संबद्ध गतिविधियां 2. मत्स्यपालन

  3. वानिकी 4. खनन और उत्खनन
- भारत में ग्रामीण क्षेत्र प्राचीन काल से अस्तित्व में हैं, और कृषि लोगों का परंपरागत व्यवसाय रहा है। यह व्यवसाय स्वाभाविक रूप से महत्वपूर्ण है क्योंकि यह भोजन जैसी मूलभूत आवश्यकता को पूरा करता है। हालांकि, समय के साथ जनसंख्या गांवों से बाहर, कस्बों और शहरों की ओर फैलने लगी। इन शहरी क्षेत्रों में गैर-कृषि गतिविधियां विकसित हुईं, जिन्हें दो क्षेत्रकों में बांटा गया है:

  1. द्वितीयक क्षेत्रक 2. तृतीयक क्षेत्रक

द्वितीयक क्षेत्रक

- द्वितीयक क्षेत्रक में वे गतिविधियां शामिल हैं जो कच्चे माल को संसाधित कर उपयोगी उत्पादों में बदलती हैं।
- इसमें निम्नलिखित गतिविधियां शामिल हैं:-
- **विनिर्माण (Manufacturing):** कच्चे माल (जैसे कपास, लकड़ी, या खनिज) को संसाधित कर वस्तुएं जैसे कपड़े, फर्नीचर या मशीनरी बनाना।
- **निर्माण (Construction):** भवन, सड़कें, पुल और अन्य बुनियादी ढांचे का निर्माण।
- **ऊर्जा उत्पादन:** बिजली उत्पादन जैसे जलविद्युत, तापविद्युत या नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों से ऊर्जा उत्पन्न करना।

तृतीयक क्षेत्रक

- **तृतीयक क्षेत्रक**, जिसे **सेवा क्षेत्रक** भी कहा जाता है, उन गतिविधियों को शामिल करता है जो प्रत्यक्ष रूप से उत्पादन से संबंधित नहीं हैं, बल्कि सेवाएं प्रदान करती हैं। यह क्षेत्रक अर्थव्यवस्था का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है क्योंकि यह समाज की विभिन्न आवश्यकताओं को पूरा करता है। इस क्षेत्रक में निम्नलिखित गतिविधियां शामिल हैं:

1. **व्यापार, होटल और जलपान गृह**: इसमें थोक और खुदरा व्यापार, होटल, रेस्तरां और खानपान सेवाएं शामिल हैं जो लोगों को वस्तुएं और भोजन उपलब्ध कराती हैं।
2. **परिवहन, संग्रहण और संचार**: यह परिवहन सेवाएं (जैसे रेल, सड़क, हवाई), गोदाम में माल का भंडारण, और संचार सेवाएं (जैसे टेलीफोन, इंटरनेट) प्रदान करता है।
3. **वित्तीय सेवाएं**: इसमें बैंकिंग, बीमा, और निवेश से संबंधित सेवाएं शामिल हैं जो वित्तीय लेनदेन और जोखिम प्रबंधन में मदद करती हैं।
4. **स्थावर संपदा और व्यवसायिक सेवाएं**: रियल एस्टेट (जैसे संपत्ति खरीद-बिक्री) और व्यवसायिक सेवाएं जैसे लेखा, परामर्श, और कानूनी सेवाएं इस श्रेणी में आती हैं।
5. **लोक प्रशासन**: सरकारी सेवाएं, जैसे प्रशासन, सुरक्षा, और सार्वजनिक कल्याण से संबंधित गतिविधियां।
6. **अन्य सेवाएं**: इसमें शिक्षा, स्वास्थ्य, मनोरंजन, और व्यक्तिगत सेवाएं जैसे सैलून या मरम्मत सेवाएं शामिल हैं।

प्राथमिक क्षेत्रक की भूमिका एवं महत्व

- प्राथमिक क्षेत्रक, विशेष रूप से **कृषि**, भारतीय अर्थव्यवस्था का आधार है। यह राष्ट्रीय आय, रोजगार, भोजन आपूर्ति और औद्योगिक कच्चे माल के संदर्भ में महत्वपूर्ण योगदान देता है।

1. राष्ट्रीय आय में योगदान

- स्वतंत्रता के समय (1947 में), राष्ट्रीय आय में कृषि का योगदान 50% से अधिक था। समय के साथ, विनिर्माण और सेवा क्षेत्रकों के विकास के कारण इसकी हिस्सेदारी कम हुई है।
- 2024-25 के आंकड़ों के अनुसार), कृषि और संबद्ध गतिविधियों का राष्ट्रीय आय में योगदान लगभग **16%** रहा है। यह कमी अर्थव्यवस्था के विविधीकरण को दर्शाती है, लेकिन कृषि अभी भी ग्रामीण अर्थव्यवस्था की रीढ़ है।

2. रोजगार के अवसर

- कृषि भारत में सबसे अधिक रोजगार प्रदान करने वाला क्षेत्रक है। स्वतंत्रता के समय, लगभग **70%** जनसंख्या कृषि और संबद्ध गतिविधियों पर निर्भर थी। हालांकि, औद्योगीकरण और शहरीकरण के कारण यह निर्भरता कम हुई है।
- 2024-25 के आंकड़ों के अनुसार, भारत की लगभग **46.1%** कार्यशील जनसंख्या अभी भी कृषि में संलग्न है। यह दर्शाता है कि कृषि ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार का प्रमुख स्रोत बनी हुई है।

3. भोजन की आपूर्ति

- भोजन जीवन की मूलभूत आवश्यकता है, और कृषि इसके उत्पादन का आधार है। भारत की बढ़ती जनसंख्या के कारण भोजन की मांग लगातार बढ़ रही है।
- 2024-25 में भारत का कुल खाद्यान्न उत्पादन (गेहूं, चावल, दालें आदि सहित) लगभग **3540 लाख टन** तक पहुंचने का अनुमान है । यह उत्पादन न केवल देश की खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करता है, बल्कि निर्यात के लिए भी योगदान देता है।

4. उद्योगों के लिए कच्चा माल

- **कपास और जूट**: कपड़ा और जूट उद्योगों के लिए कच्चा माल।
- **गन्ना**: चीनी उद्योग के लिए।
- **बांस और घास**: कागज उद्योग के लिए।
- **फल, सब्जियां और अनाज**: खाद्य प्रसंस्करण उद्योगों (जैसे अचार, जूस, बिस्कुट, ब्रेड) के लिए।

द्वितीयक क्षेत्रक की भूमिका और महत्व

- द्वितीयक क्षेत्रक, जिसे औद्योगिक क्षेत्रक भी कहा जाता है, अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह क्षेत्र प्राथमिक क्षेत्र (जैसे कृषि) से प्राप्त कच्चे माल को संसाधित कर उपयोगी उत्पादों में बदलता है।
- विनिर्माण उद्योग, निर्माण, और ऊर्जा उत्पादन इस क्षेत्र के प्रमुख घटक हैं। यह क्षेत्र लघु उद्योगों और बड़े पैमाने के उद्योगों में विभाजित है, जिनका अर्थव्यवस्था में योगदान निम्नलिखित बिंदुओं के माध्यम से समझा जा सकता है:

1. राष्ट्रीय आय में योगदान

- स्वतंत्रता के समय (1947) में द्वितीयक क्षेत्रक का राष्ट्रीय आय में योगदान केवल **14%** था, जो 2009-10 तक बढ़कर **28%** हो गया।
- यह वृद्धि विनिर्माण इकाइयों की संख्या और औद्योगिक उत्पादन में वृद्धि के कारण हुई।
- उदाहरण: टाटा लोहा और इस्पात उद्योग जैसे बड़े उद्योग और लघु उद्योगों का विस्तार राष्ट्रीय आय को बढ़ाने में सहायक रहा है।

2. रोजगार प्रदान करने में योगदान

- द्वितीयक क्षेत्रक भारत की जनसंख्या के लिए रोजगार के अवसर प्रदान करने में महत्वपूर्ण है।
- लघु और बड़े पैमाने के उद्योग मिलकर लगभग **3 करोड़ 30 लाख लोगों** को रोजगार देते हैं।
- **लघु उद्योग** अकेले **3 करोड़ 12 लाख लोगों** को रोजगार प्रदान करते हैं, जो श्रम-प्रधान प्रौद्योगिकी पर आधारित हैं और ग्रामीण व शहरी क्षेत्रों में रोजगार के अवसर बढ़ाते हैं।
- बड़े पैमाने के उद्योग, जैसे लोहा और इस्पात, पूंजी-प्रधान प्रौद्योगिकी का उपयोग करते हैं और कुशल श्रमिकों को रोजगार देते हैं।

3. आधारभूत संरचना का विकास

- द्वितीयक क्षेत्रक आधारभूत संरचना (infrastructure) के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान देता है, जैसे सड़कें, रेलवे, हवाई अड्डे, बांध (हीराकुंड, भाखड़ा नांगल), और संचार सुविधाएँ (रेडियो, टेलीफोन टावर)।
- बड़े पैमाने के उद्योग आवश्यक मशीनरी और उपकरणों का निर्माण करते हैं, जो इन परियोजनाओं को संभव बनाते हैं।
- ये सुविधाएँ आधुनिक जीवन को सुगम बनाती हैं और आर्थिक विकास को गति प्रदान करती हैं।

4. उपभोक्ता वस्तुओं का प्रावधान

- द्वितीयक क्षेत्रक, विशेष रूप से विनिर्माण उद्योग, उपभोक्ता वस्तुओं के उत्पादन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।
- ये उद्योग दैनिक जीवन में उपयोग होने वाली वस्तुओं जैसे कपड़े, पेन, दूध, साबुन, जूते, साइकिल, स्कूटर, कार आदि का निर्माण करते हैं।

तृतीयक क्षेत्रक की भूमिका तथा महत्व

- भारत की अर्थव्यवस्था में तेजी से विस्तार कर रहा है और आधुनिक जीवन को सुगम बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।
- यह क्षेत्र परिवहन, संचार, शिक्षा, स्वास्थ्य, बैंकिंग, आतिथ्य (होटल), और अन्य सेवाओं को शामिल करता है।

1. राष्ट्रीय आय में योगदान

- सेवा क्षेत्रक भारत की राष्ट्रीय आय में सबसे बड़ा योगदानकर्ता बन गया है।
- परिवहन (रेल, बस, ट्रक), संचार (टेलीफोन, मोबाइल), बैंकिंग, और सूचना प्रौद्योगिकी (IT) जैसे क्षेत्रों ने इस वृद्धि में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।
- **उदाहरण**: भारत का IT और सॉफ्टवेयर सेवा क्षेत्र विश्व स्तर पर प्रसिद्ध है, जो राष्ट्रीय आय में उल्लेखनीय योगदान देता है।

2. रोजगार प्रदान करने में योगदान

- यह क्षेत्र लाखों लोगों को रोजगार प्रदान करता है, जिसमें परिवहन चालक, शिक्षक, डॉक्टर, नर्स, बैंक कर्मचारी, होटल कर्मचारी, और IT पेशेवर शामिल हैं।
- **लघु स्तर पर**: छोटे जलपान गृह, स्थानीय परिवहन सेवाएँ, और छोटे स्वास्थ्य केंद्र अर्ध-कुशल और अकुशल श्रमिकों को रोजगार देते हैं।
- **बड़े स्तर पर**: IT कंपनियाँ, बैंक, और बड़े अस्पताल कुशल पेशेवरों को रोजगार प्रदान करते हैं।

3. विदेशों से कोषों को आकर्षित करने में योगदान

- सेवा क्षेत्रक, विशेष रूप से सूचना प्रौद्योगिकी (IT), पर्यटन, और वित्तीय सेवाएँ, विदेशी प्रत्यक्ष निवेश (FDI) को आकर्षित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।
- **IT और BPO**: भारत का सॉफ्टवेयर और बिजनेस प्रोसेस आउटसोर्सिंग (BPO) क्षेत्र विदेशी कंपनियों के लिए आकर्षक है, जिससे विदेशी पूंजी का प्रवाह बढ़ता है।
- **पर्यटन**: ऐतिहासिक स्थल, सांस्कृतिक विरासत, और मेडिकल टूरिज्म विदेशी पर्यटकों को आकर्षित करते हैं, जिससे विदेशी मुद्रा प्राप्त होती है।
- **बैंकिंग और वित्तीय सेवाएँ**: विदेशी बैंकों और वित्तीय संस्थानों की शाखाएँ भारत में निवेश को प्रोत्साहित करती हैं।
- **प्रभाव**: यह विदेशी कोष अर्थव्यवस्था को मजबूत करते हैं और आधारभूत संरचना विकास में सहायता करते हैं।

4. निर्यातों में सेवा क्षेत्रक का योगदान

- सेवा क्षेत्रक भारत के निर्यात में महत्वपूर्ण योगदान देता है, विशेष रूप से "अदृश्य निर्यात" (invisible exports) के रूप में, जैसे सॉफ्टवेयर सेवाएँ, पर्यटन, और वित्तीय सेवाएँ।
- **सूचना प्रौद्योगिकी (IT)**: भारत विश्व में सॉफ्टवेयर और IT सेवाओं का प्रमुख निर्यातक है। कंपनियाँ जैसे TCS, Infosys, और Wipro वैश्विक स्तर पर सेवाएँ प्रदान करती हैं।
- **पर्यटन और आतिथ्य**: विदेशी पर्यटकों की संख्या में वृद्धि से विदेशी मुद्रा की प्राप्ति होती है।
- **स्वास्थ्य सेवाएँ**: मेडिकल टूरिज्म के कारण विदेशी रोगी भारत में सस्ती और उच्च गुणवत्ता वाली चिकित्सा सेवाओं के लिए आते हैं।

अभ्यास प्रश्न

1. निम्न में से प्राथमिक क्षेत्र का उदाहरण कौन सा है?
(a) मुर्गीपालन (b) उर्वरक का उत्पादन करना
(c) गन्ने से चीनी बनाना (d) विकल्प क और ग

2. भारत कैसी अर्थव्यवस्था है?
(a) पूंजीवादी (b) समाजवादी
(c) साम्यवादी (d) मिश्रित

3. किस क्षेत्र में सभी प्राकृतिक उत्पादों को विनिर्माण के माध्यम से रूपों में बदल दिया जाता है?
(a) प्राथमिक (b) द्वितीयक
(c) तृतीयक (d) विकल्प क और ख दोनों

4. निम्न में से द्वितीयक क्षेत्र का उदाहरण कौन सा है?
(a) मुर्गीपालन
(b) उर्वरक का उत्पादन करना
(c) गन्ने से चीनी बनाना
(d) विकल्प ख और ग

5. निम्न में से तृतीयक क्षेत्र का उदाहरण कौन सा है?
(a) एटीएम मशीन (b) गन्ने से चीनी बनाना
(c) मधुमक्खी पालन (d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

6. अल्प रोजगार _________होता है
(a) जब लोग काम करने के इच्छुक नहीं हैं।
(b) जब लोग धीरे-धीरे काम कर रहे हों।
(c) जब लोग अपनी क्षमता से कम काम कर रहे हों।
(d) जब लोगों को उनकी नौकरी के लिए भुगतान नहीं किया जाता है।

7. कौन सा क्षेत्र भारत में सबसे बड़े उत्पादक क्षेत्र के रूप में उभरा है। निम्नलिखित विकल्पों में से एक का चयन करें:
(a) माध्यमिक क्षेत्र (b) तृतीयक क्षेत्र
(c) प्राथमिक क्षेत्र (d) विज्ञान और प्रौद्योगिकी क्षेत्र

8. जीवन बीमा किसकी गतिविधि है?
(a) प्राथमिक क्षेत्र (b) माध्यमिक क्षेत्र
(c) सेवा क्षेत्र (d) उपरोक्त में से कोई नहीं

9. सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यमों का उद्देश्य _________ है।
(a) लाभ कमाने
(b) मनोरंजन
(c) सामाजिक कल्याण और सुरक्षा
(d) उपरोक्त में से कोई नहीं

10. कौन सा क्षेत्र भारत में सबसे बड़े उत्पादक क्षेत्र के रूप में उभरा है। निम्नलिखित विकल्पों में से एक का चयन करें:
(a) माध्यमिक क्षेत्र
(b) तृतीयक क्षेत्र
(c) प्राथमिक क्षेत्र
(d) विज्ञान और प्रौद्योगिकी क्षेत्र

11. निम्नलिखित में से कौन सा उदाहरण असंगठित क्षेत्र के अंतर्गत नहीं आता है?
(a) एक किसान अपने खेत की सिंचाई कर रहा है।
(b) एक ठेकेदार के लिए काम करने वाला एक दिहाड़ी मजदूर।
(c) एक अस्पताल में एक डॉक्टर एक मरीज का इलाज कर रहा है।
(d) एक हथकरघा बुनकर अपने घर में करघे पर काम कर रही है।

12. देश में आधे से अधिक श्रमिक किस प्राथमिक क्षेत्र में कार्यरत हैं:
(a) मत्स्य पालन
(b) कृषि
(c) टोकरी बनाना
(d) उपरोक्त में से कोई नहीं

13. कृषि क्षेत्र में __________ श्रमिक हैं:
(a) नियोजित से अधिक (b) कम नियोजित
(c) अधिक कार्यरत (d) कार्यरत के तहत

14. रोजगार के अंतर्गत क्या छिपा है __________ कहलाता है:
(a) छिपे हुए रोजगार (b) खुला रोजगार
(c) प्रच्छन्न रोजगार (d) दृश्यमान रोजगार

15. सरकार के नियंत्रण से बाहर बड़े पैमाने पर छोटी और बिखरी हुई इकाइयों की विशेषता वाले क्षेत्र को _______ कहा जाता है:
(a) संगठित क्षेत्र (b) निश्चित क्षेत्र
(c) अस्थायी क्षेत्र (d) असंगठित क्षेत्र

16. वह क्षेत्र जिसमें बड़ी संख्या में लोग शामिल होते हैं, जो अपने दम पर छोटे-छोटे काम करते हैं जैसे कि सड़क पर बेचना या मरम्मत का काम करना, उसे ________ कहा जाता है:
(a) सेवा क्षेत्र (b) संगठित क्षेत्र
(c) असंगठित क्षेत्र (d) उपरोक्त में से कोई नहीं

17. 1990 के बाद से, किस क्षेत्र में बड़ी संख्या में श्रमिकों ने अपनी नौकरी खो दी?
(a) सेवा क्षेत्र (b) संगठित क्षेत्र
(c) असंगठित क्षेत्र (d) उपरोक्त में से कोई नहीं

18. असंगठित क्षेत्र के कामगारों को संरक्षण और समर्थन दोनों के लिए __________ आवश्यक है:
(a) ग्रामीण और शहरी क्षेत्र
(b) आर्थिक और राजनीतिक विकास
(c) सामाजिक और राजनीतिक विकास
(d) आर्थिक और सामाजिक विकास

19. निम्नलिखित में से कौन सी गतिविधि प्राथमिक क्षेत्र से संबंधित नहीं है?
(a) मत्स्य पालन (b) बैंकिंग
(c) खनन (d) वानिकी

20. निम्नलिखित में से कौन सा क्षेत्र भारत में सबसे बड़ा नियोक्ता है?
(a) प्राथमिक क्षेत्र (b) माध्यमिक क्षेत्र
(c) तृतीयक क्षेत्र (d) आईटी क्षेत्र

21. बजट किन चार मुख्य क्षेत्रों पर केंद्रित है?
(a) कृषि, उद्योग, बुनियादी ढांचा, स्वास्थ्य सेवा
(b) रोजगार, कौशल, एमएसएमई, मध्यम वर्ग
(c) शिक्षा, अनुसंधान, पर्यावरण, ऊर्जा
(d) प्रौद्योगिकी, रक्षा, सामाजिक कल्याण, परिवहन

22. निम्नलिखित में से कौन सी आर्थिक गतिविधि तृतीयक क्षेत्र में नहीं है?
(a) बैंकिंग (b) मधुमक्खी पालन
(c) शिक्षण (d) कॉल सेंटर में काम करना

23. निम्नलिखित में से किस प्रकार की गतिविधियाँ द्वितीयक क्षेत्र में शामिल हैं?
(a) यह वस्तुओं के बजाय सेवाओं को उत्पन्न करता है।
(b) विनिर्माण के माध्यम से प्राकृतिक उत्पादों को बदल दिया जाता है।
(c) प्राकृतिक संसाधनों का दोहन करके वस्तुओं का उत्पादन किया जाता है।
(d) इसमें कृषि, वानिकी और डेयरी शामिल हैं।

24. सूचना और संचार प्रौद्योगिकी का संबंध ________ से है
(a) प्राथमिक क्षेत्र (b) माध्यमिक क्षेत्र
(c) तृतीयक क्षेत्र (d) उपरोक्त में से कोई नहीं

25. आर्थिक गतिविधियों को कौन करता है?
(a) व्यक्तियों (b) फर्म
(c) सरकार (d) उपरोक्त सभी

26. अर्थव्यवस्था को किस आधार पर सार्वजनिक और निजी क्षेत्रों में वर्गीकृत किया गया है?
(a) रोजगार की स्थिति
(b) आर्थिक गतिविधि की प्रकृति
(c) उद्यमों का स्वामित्व
(d) उद्यम में कार्यरत श्रमिकों की संख्या

27. निम्न में से असत्य कथन है-
(a) जब हम प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग करके किसी वस्तु का उत्पादन करते हैं, तो इसे प्राथमिक क्षेत्रक की गतिविधि कहा जाता है।
(b) द्वितीयक क्षेत्रक क्रमशः संवर्धित विभिन्न प्रकार के उद्योगों से जुड़ा हुआ है इसलिए इसे औद्योगिक क्षेत्रक भी कहा जाता है।
(c) जब प्राकृतिक उत्पादों को विनिर्माण प्रणाली के जरिए अन्य रूपों में परिवर्तित किया जाता है तो उसे तृतीयक क्षेत्रक कहते हैं।
(d) तृतीयक क्षेत्रक की गतिविधियाँ प्राथमिक और द्वितीयक क्षेत्रक के विकास में मदद करती हैं।

28. असंगठित क्षेत्रक की विशेषता नहीं है-
(a) इसकी एक निश्चित प्रक्रिया व कार्यविधि है।
(b) यह क्षेत्रक छोटी-छोटी और बिखरी इकाइयों से निर्मित होता है।
(c) इस क्षेत्र में कम वेतन मिलता है।
(d) रोजगार नियमित और सुरक्षित नहीं होता।

29. जो गतिविधियाँ वस्तुओं की बजाय सेवाओं का सृजन करती हैं, वे शामिल की जाती हैं -
(a) प्राथमिक क्षेत्रक में (b) द्वितीयक क्षेत्रक में
(c) तृतीयक क्षेत्रक में (d) चतुर्थक क्षेत्रक में

30. निम्न में से असत्य कथन है-
(a) कृषि क्षेत्र के श्रमिक वस्तुओं का उत्पादन नहीं करते हैं।
(b) संगठित क्षेत्रक के अधिकांश श्रमिकों को रोजगार सुरक्षा प्राप्त होती है।
(c) भारत में बड़ी संख्या में श्रमिक असंगठित क्षेत्रक में काम कर रहे हैं।
(d) प्राथमिक, द्वितीयक और तृतीयक क्षेत्रक की गतिविधियाँ परस्पर निर्भर हैं।

ANSWER KEY

1. [a]	2. [d]	3. [c]	4. [d]	5. [a]
6. [c]	7. [c]	8. [c]	9. [c]	10. [b]
11. [c]	12. [b]	13. [d]	14. [c]	15. [d]
16. [c]	17. [b]	18. [d]	19. [b]	20. [a]
21. [b]	22. [b]	23. [c]	24. [c]	25. [d]
26. [c]	27. [c]	28. [a]	29. [c]	30. [a]

♦♦♦♦

शैक्षणिक रीतिविज्ञान

- वैदिक काल में शिक्षा को लेकर सर्वप्रथम विचारधारा प्रारम्भ हुई। उस समय शिक्षा के केन्द्र गुरुकुल हुआ करते थे।
- यह काल 1500 ई.पू. से 600 ई.पू. तक का माना जाता है।
- सर्वप्रथम अरस्तू द्वारा कहा गया कि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है।
- सर्वप्रथम सामाजिक विज्ञान की अवधारणा का जन्म 19वीं सदी में ब्रिटेन में हुआ था।
- सामाजिक अध्ययन को सर्वप्रथम अमेरिका में एक विद्यालय विषय के रूप में 1892 ई. में अध्ययन करना शुरू किया गया।
- सामाजिक विज्ञान की अवधारणा इतिहास, भूगोल, नागरिक शास्त्र, अर्थशास्त्र, इन चार विषयों से निर्मित की गयी है।
- वर्तमान समय में सामाजिक विज्ञान के विषय में 6 मूल विषय पढ़ाये जाते हैं।
- 6 मूल विषय इतिहास, भूगोल, नागरिकशास्त्र, अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र, दर्शनशास्त्र है।
- भारत में वर्ष 1916 में सामाजिक विज्ञान को विषय के रूप में मान्यता मिली तथा अंग्रेजी शासनकाल में कुछ जगहों पर इसका अध्ययन करवाया जाने लगा।
- सामाजिक विज्ञान विषय के विकास के लिए वर्ष 1921 में परिषद् निर्मित की गयी।
- वर्ष 1934 में सोशल स्टडीज़ कमीशन बनाया गया तथा भारत की तत्कालीन, भौगोलिक, सामाजिक, आर्थिक, दार्शनिक, सामाजिक अवधारणाओं के अनुसार एक विशेष विषयवस्तु के रूप में सामाजिक विज्ञान को संगठित रूप में तैयार किया गया।
- मुदालियर आयोग वर्ष 1952–53 में बनाया गया। मुदालियर आयोग के अध्यक्ष लक्ष्मण स्वामी मुदालियर थे। इसे माध्यमिक शिक्षा आयोग भी कहा जाता है।
- सामाजिक अध्ययन को अनिवार्य विषय के रूप में प्राथमिक कक्षा स्तर पर पढ़ाने की सिफारिश मुदालियर आयोग ने की।
- भारत में वर्ष 1955 से सामाजिक अध्ययन को अनिवार्य विषय के रूप में प्राथमिक स्तर पर अध्ययन करवाया जाता है।

गाँधीजी की शिक्षा योजना और सामाजिक ज्ञान–

- देश की शिक्षा को गाँधी के विचारों ने उसी प्रकार प्रभावित किया जिस प्रकार जॉन ड्यूवी ने अमेरिका की शिक्षा नीति को प्रभावित किया था।
- महात्मा गाँधी ने अपनी नई शिक्षा योजना प्रस्तुत करते हुए वर्धा– सम्मेलन में सभापति पद से भाषण देते हुए कहा– "मैं तो ऐसी शिक्षा देने का मार्ग प्रशस्त कर रहा हूँ जो बच्चों को स्वावलम्बी और आत्मनिर्भर बनायें।"
- गाँधीजी की इस नवीन शिक्षा योजना को व्यावहारिक रूप देने तथा तदद्विषयक विस्तृत पाठ्यक्रम निर्धारित करने का कार्य डॉ. जाकिर हुसैन के सभापतित्व में एक समिति को सौंपा गया।
- इस समिति ने 7 वर्ष से 14 वर्ष तक की आयु के बालकों के लिए बेसिक शिक्षा के नाम से एक सप्तवर्षीय पाठ्यक्रम का सुझाव दिया। इस पाठ्यक्रम में शिल्प, मातृभाषा, गणित, सामान्य विज्ञान, कला, खेलकूद व व्यायाम के साथ–साथ सामाजिक ज्ञान का विषय भी समायोजित किया गया।

माध्यमिक शिक्षा आयोग

- माध्यमिक शिक्षा की समस्याओं पर विचार करने के लिए भारत सरकार ने मद्रास विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. लक्ष्मण स्वामी मुदालियर की अध्यक्षता में सितम्बर, 1952 में माध्यमिक शिक्षा आयोग की स्थापना की।
- आयोग ने छात्रों को सामाजिक वातावरण से अनुकूलन कराने के लिए इस विधि का अध्यापन अनिवार्य किया और सामाजिक ज्ञान के स्वरूप को इस प्रकार स्पष्ट किया– "सामाजिक ज्ञान, इतिहास, भूगोल और नागरिक शास्त्र का सम्मिश्रण नहीं होकर उनका एक पूर्ण विषय होगा जो छात्रों को यह समझा सकने में समर्थ हो कि समाज ने अपनी वर्तमान रूप किस प्रकार धारण किया और जिन सामाजिक शक्तियों और आन्दोलनों के बीच वे रहते हैं उनकी विवेकपूर्ण ढंग से व्याख्या कर सकें।"
- सर्वप्रथम पंजाब सरकार ने अपने शिक्षा सलाहकार बोर्ड (1949) की पाठ्यक्रम के पुनर्गठन की सिफारिशों को मानते हुए राज्य में सभी स्तरों पर सामाजिक ज्ञान का अध्यापन निश्चित किया।

कोठारी आयोग

- वर्ष 1964 में डॉ. डी. एस. कोठारी की अध्यक्षता में एक शिक्षा आयोग का पुनः गठन किया गया। इस आयोग ने विद्यालयी शिक्षा के प्रत्येक पहलू पर विचार किया।
- पाठ्यवस्तु के गठन के सम्बन्ध में आयोग ने प्राथमिक स्तर (कक्षा एक से पाँच) तक एकीकृत उपागम को वांछनीय ठहराया।
- उच्च प्राथमिक स्तर (कक्षा 6 से 8) पर कुछ प्रकरणों के एकीकृत रूप को छोड़कर इतिहास, भूगोल और नागरिक शास्त्र को पृथक–पृथक पढ़ाने का सुझाव दिया। माध्यमिक स्तर पर इन्हें पृथक रूप से ही पढ़ाया जायेगा और ये उच्च माध्यमिक स्तर पर समाज विज्ञानों के अध्ययन की पृष्ठभूमि निर्मित करने में योग देंगे।
- आयोग की सिफारिशों पर राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान परिषद्, दिल्ली ने 1975 में एक पाठ्यक्रम बनाया– दस वर्षीय विद्यालय पाठ्यक्रम का एक ढाँचा, इसमें सामाजिक ज्ञान और सामान्य विज्ञान के एकीकृत रूप को पर्यावरण अध्ययन नाम दिया गया।
- पर्यावरण अध्ययन–1 (कक्षा 1 व 2) में सामाजिक, सांस्कृतिक व मानवजन्य परिवेश को रखा गया।
- पर्यावरण–2 (कक्षा 3 व 5) में भौतिक और प्राकृतिक परिवेश रखा गया।

- कक्षा 6, 7 व 8 स्तर पर मानव अध्ययन उसके समय, स्थान और अन्य मानव से सम्बद्ध होकर इतिहास, भूगोल और नागरिक शास्त्र के रूप में प्रस्तुत किया गया।
- अतः इस स्तर पर सामाजिक ज्ञान पृथक् विषयों के रूप में पढ़ाया जाने लगा पर यहाँ भी मानव जीवन की सम्पूर्णता पर ही बल दिया गया।

सामाजिक अध्ययन की अवधारणाएँ –

- **एम.पी. मुफात –** जीवन जीना एक सुन्दर कला है, जो सामाजिक अध्ययन की विषयवस्तु से आती है।
- एम. पी. मुफात, "सामाजिक अध्ययन ज्ञान का वह क्षेत्र है जो युवकों की आधुनिक सभ्यता के विकास को समझने में सहायता देता है। ऐसा करने के लिए वह अपनी विषय वस्तु को समाज विज्ञानों तथा समसामयिक जीवन से प्राप्त करता है।"
- **जोरोलिमैक –** सामाजिक अध्ययन समाज के सामाजिक सम्बन्धों का अध्ययन है।
- **शब्दकोश के अनुसार –** सामाजिक अध्ययन भूगोल, इतिहास, नागरिकशास्त्र या अर्थशास्त्र से ली गई विषयवस्तु का योग मात्र नहीं है, बल्कि एक ऐसी विषयवस्तु है जो जीने का ढंग देती है।

सामाजिक अध्ययन का क्षेत्र –

- सामाजिक अध्ययन की विषयवस्तु से तात्पर्य इस विषय के शिक्षण, विस्तार, विभिन्नता, अधिगम, अनुभव की सीमा, वास्तविक जीवन की परिस्थितियों में उपयोगिता से है।
- सामाजिक अध्ययन की महत्ता उसकी विषय सामग्री के साथ–साथ विद्यार्थियों में विकसित किये जाने वाले कौशलों से है जिसके परिणामस्वरूप वे समाज के उत्तरदायी नागरिक बन सकें।
- प्रारम्भिक स्तर पर सामाजिक अध्ययन के इतिहास भाग के अन्तर्गत केवल आदर्श घटनाएँ, आदर्श व्यक्तित्व का अध्ययन किया जाता है।
- सामाजिक विज्ञान की शाखा नागरिक शास्त्र के अन्तर्गत राजनीति विज्ञान व लोक प्रशासन का अध्ययन का अध्ययन किया जाता है।
- निकोलसन व राइट के शब्दों में, 'सामाजिक अध्ययन का क्षेत्र बहुत विस्तृत है।
- 'सामाजिक अध्ययन का लक्ष्य मनुष्य का वर्तमान सामाजिक जीवन तथा सम्पूर्ण विश्व का अध्ययन है।'
- राजनीति विज्ञान के अन्तर्गत देश, काल, परिस्थिति के अनुसार अधिकारों व कर्त्तव्यों का अध्ययन किया जाता है।
- लोक प्रशासन में स्वतन्त्रता व नियंत्रण के व्यवहार का अध्ययन किया जाता है।
- प्राथमिक, उच्च प्राथमिक स्तर तक सामान्य जीवन शैली, बालक को सुनागरिक के रूप में तैयार करने से संबंधित विषय वस्तु, जीवन–शैली, देशकाल परिस्थिति के अनुसार अधिकार एवं कर्त्तव्य, राष्ट्र के प्रतीक, संकेत, सामान्य भौगोलिक परिस्थितियाँ जैसे– सूर्य ग्रहण, चन्द्र ग्रहण, ज्वालामुखी, ऋतु परिवर्तन, दिन–रात का बनना आदि का अध्ययन करवाया जाता है।

सामाजिक अध्ययन का अर्थ

- सामाजिक अध्ययन दो शब्दों 'सामाजिक' तथा 'अध्ययन' से मिलकर बना है। सामाजिक का अर्थ है– समाज के लिए अथवा समाज द्वारा। अर्थात् सामाजिक अध्ययन का अर्थ है– समाज द्वारा समाज के लिए अध्ययन।
- सामाजिक अध्ययन/सामाजिक विज्ञान हमारी सामाजिक–आर्थिक संस्कृति की अच्छाइयों के संरक्षण के प्रयोजन और उसमें सुधार लाने के लिए सामाजिक तथ्यों और घटनाओं निरीक्षण, सामाजिक अनुभव आदि के द्वारा सामाजिक संस्थानों, सामाजिक कौशलों, सामाजिक मानकों, सामाजिक समस्याओं, सामाजिक परिवर्तनों, सामाजिक रीतियों सामाजिक विरासत इत्यादि का अध्ययन है।।
- सामाजिक अध्ययन मनुष्य की अन्य लोगों, पृथ्वी और वस्तुओं एवं सेवाओं के साथ अंतक्रिया से संबंधित है।
- यह मनुष्य के सामाजिक एवं भौतिक वातावरण के साथ संबंधों का अध्ययन करता है।
- फोरेस्टर, "सामाजिक अध्ययन शिक्षा के आधुनिक दृष्टिकोण का एक अंश है जिसका ध्येय तथ्यात्मक सूचनाओं को संगृहीत या एकत्र करने की अपेक्षा मानदण्डों, वृत्तियों आदर्शों तथा रूचियों का निर्माण करना है।"
- जॉन यू. माइकेलिस, "सामाजिक अध्ययन का कार्यक्रम मनुष्य तथा अतीत, वर्तमान तथा विकसित होने वाले भविष्य के सामाजिक और भौतिक पर्यावरणों के प्रति उनके द्वारा की गयी पारस्परिक क्रिया का अध्ययन है।"
- राष्ट्रीय शैक्षिक समुदाय आयोग, "सामाजिक अध्ययन वह विषयवस्तु है जो मानव समाज के संगठन एवं विकास से सम्बन्धित है और मनुष्य के सामाजिक समूहों के सदस्य के रूप में अध्ययन करती है।"
- भारत सरकार के शिक्षा एवं समाज कल्याण मंत्रालय द्वारा निर्मित पाठ्यक्रम कमेटी प्राथमिक विद्यालय के चरण में सामाजिक विज्ञान की अपेक्षा सामाजिक अध्ययन शब्द का प्रयोग करना अधिक उपयुक्त होगा क्योंकि यह एक विस्तृत और संयुक्त अनुदेशनात्मक क्षेत्र प्रस्तुत करता है।
- यह भौतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक तत्त्वों के विशेष संदर्भ में बालक के सम्पूर्ण वातावरण को धीरे –धीरे प्रकट करने के लिए इतिहास, भूगोल, नागरिक शास्त्र और अर्थशास्त्र जैसे विषयों के जानकारी हासिल करता है।

सामाजिक अध्ययन की विषयवस्तु का महत्त्व एवं संबंध

- सामाजिक अध्ययन की विषय वस्तु – अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र, दर्शनशास्त्र ।
- प्रारम्भिक स्तर पर अर्थशास्त्र की विषय वस्तु दो प्रमुख मुद्दों पर बल देती है।
  (i) अर्थ की प्राप्ति किस प्रकार की जाये।
  (ii) अर्थ का नियोजन किस प्रकार किया जाये।
- प्रारंभिक स्तर पर अर्थशास्त्र की विषय वस्तु के अन्तर्गत बैंक, बीमा बचत के बारे में सामान्य जानकारी प्रदान की जाती है।
- अर्थशास्त्र को पाठ्यक्रम में शामिल करने का उद्देश्य व्यक्ति को आर्थिक व सामाजिक रूप से सम्पन्न बनाना हैं।

- उच्च प्राथमिक स्तर की समाजशास्त्र में मुख्य रूप से दो शब्दों को शामिल किया गया है, प्रस्थिति तथा भूमिका।
- प्रस्थिति का अर्थ है– पद, व्यक्ति का समाज में क्या पद है, ये प्रस्थिति कहलाती है।
- सामाजिक अध्ययन का अन्य विषयों से संबंध – विद्यालय में बालक को सर्वप्रथम भाषा का ज्ञान करवाया जाता है।

सामाजिक अध्ययन की विशेषताएं

- सामाजिक अध्ययन मनुष्यों तथा उनके समुदायों का अध्ययन है।
- यह वह अध्ययन है जो छात्र–छात्राओं को उस वातावरण को समझने तथा उसकी व्याख्या करने में सहायता प्रदान करता है जिसमें वे पैदा तथा विकसित हुए हैं।
- यह अध्ययन इस तथ्य को स्पष्ट करता है कि मानव स्थानीय, राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय स्तरों पर एक साथ मिलकर जीवनयापन तथा कार्य करता है।
- यह मनुष्य तथा उसके भौतिक पर्यावरण के बीच होने वाली अन्त: क्रिया का अध्ययन करता है।
- इसके क्षेत्र में सामाजिक तथा अन्य प्रकार के पर्यावरणों का अध्ययन भी निहित है।
- सहायता प्रदान करता है।
- यह छात्रों को समसामयिक समस्याओं को समझने में सहायता देता है।
- यह मानवीय सम्बन्धों पर बल देता है।
- सामाजिक अध्ययन में केवल विषयों का योग ही निहित नहीं है वरन् यह एक एकीकृत उपागम है।
- सामाजिक अध्ययन इस तथ्य को स्पष्ट करता है कि हमारे दैनिक जीवन पर विश्व की घटनाओं का क्या प्रभाव पड़ा है।
- यह वह अध्ययन है जिसमें अतीत तथा वर्तमान में मानवता को प्रभावित करने वाले मामलों, समस्याओं तथा ढाँचों का अध्ययन किया जाता है।
- सामाजिक अध्ययन समग्र ज्ञान के एक क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करता है।
- सामाजिक अध्ययन सामयिक जीवन तथा परिस्थितियों के अध्ययन पर बल देता है।
- सामाजिक शिक्षा के आधुनिक दृष्टिकोण का प्रतिपादन करता है।
- सामाजिक अध्ययन विषयों के विभाजन की कठोरता को समाप्त करके ज्ञान की सापेक्षता पर बल देता है।
- सामाजिक अध्ययन उत्तम नागरिकता के विकास में सहायता प्रदान करके लोकतन्त्र को सफल एवं सुरक्षित बनाने में सहायक है।
- सामाजिक अध्ययन शिक्षण के लिए एक नवीन आधार एवं दृष्टिकोण प्रदान करता है।

भारत में सामाजिक अध्ययन की प्रकृति

- विद्यालयी पाठ्यक्रम में सामाजिक अध्ययन को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है।
- सामाजिक अध्ययन एक पृथक् इकाई न होकर विभिन्न विषयों अर्थात् इतिहास, भूगोल, राजनीति शास्त्र, समाजशास्त्र तथा मनोविज्ञान का समूह समझा जाता है।
- यह इन विभिन्न सामाजिक विज्ञानों का केवल मात्र समूह न होकर एक स्वतंत्र अध्ययन क्षेत्र है।
- पाठ्यक्रम का क्षेत्र भी विद्यालय की आंतरिक व बाह्य क्रियाओं के सम्मिलित रूप से निर्धारित किया जाना चाहिए ताकि विद्यालय समाज का प्रतिरूप प्रस्तुत करें।
- जॉन डिवी ने भी विद्यालय को समाज का लघुरूप माना है।
- समाजिक अध्ययन मानव के सभी दृष्टिकोणों से सम्पूर्ण अध्ययन प्रस्तुत करता है।
- सामाजिक अध्ययन में सभी सामाजिक संस्थाओं व संगठनों के विकास का अध्ययन किया जाता है।
- यह मानव जीवन के भूतकाल, वर्तमान तथा भविष्य का अध्ययन करवाता है। इसमें सभी विषय राजनीति शास्त्र, समाज शास्त्र, अर्थशास्त्र, इतिहास, भूगोल के आधारभूत सिद्धान्तों का अध्ययन किया जाता है।
- इस प्रकार यह एक एकीकृत विषय है, जिसकी सामग्री मानव ज्ञान एवं अनुभवों पर आधारित है।
- **सामाजिक अध्ययन की प्रकृति को निम्नानुसार समझा जा सकता है–**
- **समुदायों का अध्ययन–** सामाजिक अध्ययन क्षेत्र में मनुष्य व उसके सामाजिक वातावरण पर ध्यान केन्द्रित करते हुए समुदाय का सभी स्तरों पर अध्ययन किया जाता है।
- **संबंधों के जाल का अध्ययन–** सामाजिक अध्ययन संबंधों के उस जाल का अध्ययन करता है जो जनसाधारण तथा उनके वातावरण में विकसित होता है।
- **मानवीय संबंधों का अध्ययन –** सामाजिक अध्ययन में मानवीय संबंधों का अध्ययन किया जाता है। मानवीय संबंधों से अभिप्राय उन संबंधों से है जो मनुष्य और समुदायों, संस्थाओं, राज्यों आदि के बीच स्थित होते हैं।
- **गतिशील विषय–** सामाजिक अध्ययन एक गतिशील विषय है। इसमें निरन्तर विकास जारी है क्योंकि सामाजिक प्रक्रिया और समस्याएँ बदलती रहती है।
- **सामाजिक विज्ञानों की प्रायोगिक शाखा–** सामाजिक अध्ययन सामाजिक विज्ञानों की प्रायोगिक शाखा है, जिसे भावी नागरिकों में उचित अभिवृत्तियों और कौशलों को विकसित करने के लिए विद्यालय के पाठ्यक्रम में रखा गया है।
- **सामाजिक तथा भौतिक वातावरण का अध्ययन–** सामाजिक अध्ययन वह अध्ययन है जो सामाजिक तथा भौतिक वातावरण की विवेचना करता है।

सामाजिक अध्ययन शिक्षण के उपागम–

- **विषयी उपागम–** बीसवीं शताब्दी तक विषयी उपागम पाठ्यचर्या निर्माण तथा शिक्षण हेतु प्रभावशाली उपागम था। यह एक परंपरागत उपागम है।
- यह उपागम सरलतापूर्वक परिभाषित होने वाले तथा औसत ज्ञान पर केन्द्रित उपागम है।

- यह उपागम इस अवधारणा पर आधारित है कि विषय इस जटिल संसार में पदानुक्रम निर्माण के लिए निर्मित है तथा वे विद्यार्थियों को अपेक्षित विशिष्ट ज्ञान प्रदान करते हैं जिनका उन्हें जटिल संसार में समायोजन हेतु आवश्यकता है।
- **अंतर्विषयी उपागम –** अंतर्विषयी उपागम संश्लेषण की वास्तविक प्रक्रिया के प्रयोग द्वारा विभिन्न विषयों से ज्ञान के समाकलन में सहायता करता है।
- इस उपागम की मान्यता है कि ज्ञान एक एकल तत्व होता है तथा इसे विभिन्न विषयों के रूप में एक निश्चित सीमा रेखा द्वारा विभाजित नहीं किया जा सकता है।
- ज्ञान का विभिन्न विषयों में विभाजन वास्तविक विभाजन नहीं है, विषयों के मध्य एक अनवरत अंतः क्रिया जारी रहती है।
- **बहुविषयी उपागम** – यह एक ऐसा उपागम है जो विभिन्न विषयों के दृष्टिकोण से अवधारणाओं को परिभाषित या समझने की अनुमति देता है।
- बहुविषयी उपागम एक घटना या मुद्दे को समझने के लिए विभिन्न विषयों के दृष्टिकोणों का उपयोग करता है।
- **विषयगत उपागम –** शिक्षण का विषयगत उपागम एक ऐसा उपागम है जिसमें शिक्षण की संपूर्ण प्रक्रिया "विषय" के चारों ओर केन्द्रित होती है।
- एक विषय रूचि का एक प्रकरण होता है जो विभिन्न शिक्षण अधिगम क्षेत्रों या विषयों को संबंधित करता है।
- **रचनावादी उपागम** – इस उपागम के अनुसार अधिगम आन्तरिक संज्ञानात्मक गतिविधि के रूप में होता है, जिसमें बच्चा अपने कक्षा–कक्ष अनुभवों से ज्ञान का सृजन करता है। रचनावादी शिक्षण की आगमन विधि का समर्थन करते हैं। प्रमुख समर्थक– पियाजे, वायगोत्स्की, जे.एस. बुनर है।
- **आगमन उपागम**– आगमन की प्रक्रिया अर्थात् विशिष्ट तथ्यों से सामान्य सिद्धान्तों के तर्क पर आधारित है। इसमें विशिष्ट से सामान्य, मूर्त से अमूर्त की ओर बढ़ते हैं। आगमन उपागम विद्यार्थी केन्द्रित उपागम है। बच्चों को स्वयं सूत्र निर्माण हेतु प्रेरित किया जाता है।
- **निगमन उपागम** – निगमन उपागम निगमन पर आधारित होता है। यह सामान्य नियम से विशिष्ट, सूत्र से उदाहरण, अज्ञात से ज्ञात, अमूर्त से मूर्त की ओर अग्रसर होता है। यह उपागम शिक्षक केन्द्रित उपागम है।

अभ्यास प्रश्न

1. "सामाजिक विज्ञान उन सभी विज्ञानों के लिए एक सामान्य शब्द के रूप में जो मानरव मामलों से संबंधित हैं।" यह परिभाषित किया गया है–
(a) सेलीगमेन द्वारा (b) मिशेल द्वारा
(c) फेयरचाइल्ड द्वारा (d) पीटर लेविस द्वारा

2. निम्नलिखित में से कौन–सा सामाजिक अध्ययन के अंतर्विषयक उपागम का गुण नहीं है?
(a) एक ही अध्यापक पूरी कक्षा का संचालन कर सकता है।
(b) विषय–वस्तु का पुन: पठन कम होता है या नहीं होता।
(c) 'बस्ते के बोझ' को कम करने में सहायक।
(d) बच्चे विषय विषेष में विशेष योग्यता अर्जित करते हैं।

3. निम्नलिखित में से सामाजिक विज्ञान की नवीन संकल्पना कौन–सी है?
(a) तथ्यात्मक सूचनाओं को एकत्र करना
(b) सामाजिक प्रथाओं का अध्ययन
(c) मानवीय संबंधों का अध्ययन एवं समाज को श्रेष्ठ बनाना
(d) अन्तर्राष्ट्रीय संबंधों को अध्ययन

4. भारत में विभिन्न विषयों को समन्वित करने का प्रथम प्रयास किसने किया?
(a) पं. जवाहरलाल नेहरू (b) मदन मोहन मालवीय
(c) महात्मा गाँधी (d) बाल गंगाधर तिलक

5. सामाजिक विज्ञान की प्रकृति नहीं है–
(a) युगों से मनुष्य के विकास का अध्ययन
(b) मानव संबंधों का अध्ययन
(c) अध्ययन का अयथार्थवादी पाठ्यक्रम
(d) विभिन्न विषयों का एक अनूठा संयोजन

6. उच्च प्राथमिक स्तर पर कौन–सा विषय सामाजिक अध्ययन में सम्मिलित नहीं है?
(a) राजनीति शास्त्र (b) दर्शन शास्त्र
(c) इतिहास (d) भूगोल

7. पाठ्यक्रम निर्माण का सिद्धांत नहीं होना चाहिए–
(a) क्रियाशीलता का (b) विविधता का
(c) उपयोगिता का (d) परीक्षा केन्द्रित

8. विद्यालय को समाज का लघुरूप बताया है–
(a) जॉन डी.वी. ने (b) अरस्तू ने
(c) प्लेटो ने (d) महात्मा गाँधी ने

9. मुदालियर आयोग की स्थापना कब की गयी थी?
(a) 1949 (b) 1951
(c) 1952 (d) 1954

10. विद्यालय के पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया जाने वाला नवीनतम विषय है–
(a) गणित (b) विज्ञान
(c) सामाजिक ज्ञान (d) हिन्दी

11. सामाजिक विज्ञान किससे संबंधित है?
(a) माल का निर्माण (b) आजीविका के साधन
(c) आपूर्ति व खपत (d) दिए गए सभी विकल्प

12. सामाजिक अध्ययन का प्रमुख केन्द्र बिन्दु है–
(a) मानवीय संबंध (b) भौगोलिक संबंध
(c) प्राकृतिक संबंध (d) ऐतिहासिक संबंध

13. सामाजिक अध्ययन शिक्षण का उद्देश्य है–
(a) सांस्कृतिक विरासत का विकास करना।
(b) राष्ट्रीय एकता और अन्तर्राष्ट्रीय समझ विकसित करना।
(c) अच्छे नागरिक का विकास करना।
(d) उपर्युक्त सभी

14. जब शिक्षार्थी अपनी परिभाषा, अवधारणा और सिद्धांत स्वयं बनाते हैं, तो वे निर्मित करते हैं–
(a) परिशुद्धता (b) सामान्यीकरण
(c) यथार्थता (d) बारंबारता

विगत वर्ष के प्रश्न

1. 1950-53 में कालीबंगा के उत्खनन कार्य में जिस पुरातत्ववेत्ता का प्रमुख योगदान रहा, वह है?
(a) अमलानन्द घोष
(b) दयाराम साहनी
(c) जॉन मार्शल
(d) आर. सी. अग्रवाल **[a]**

2. भारतीय संविधान का कौन सा अनुच्छेद ग्रामसभा के बारे में है?
(a) 243 F (b) 243 C
(c) 243 D (d) 243 A **[d]**

3. भारतीय संविधान में 'शिक्षा' किस सूची का विषय है?
(a) अवशिष्ट सूची (b) संघ सूची
(c) राज्य सूच (d) समवर्ती सूची **[d]**

4. गल्फ स्ट्रीम की तुलना अन्य किस महासागरीय धारा से की जा सकती है?
(a) कैलिफोर्निया धारा (b) क्यूरोशिवो धारा
(c) आयोशियो धारा (d) पेरु धारा **[b]**

5. ए.ओ. ह्यूम कौन थे?
(a) भारत के गवर्नर जनरल
(b) एक व्यापारी
(c) एक नेता
(d) सेवानिवृत भारतीय सिविल सेवक **[d]**

6. निम्न में से कौन सा युग्म सुमेलित नहीं है?

भारतीय संविधान के प्रावधान	**स्रोत**
(a) आपातकालीन प्रावधान	जर्मनी
(b) मौलिक अधिकार	यू एस ए
(c) विधि द्वारा स्थापित प्रक्रिया	जापान
(d) समवर्ती सूची	कनाडा **[d]**

7. भारत के प्रथम लोक सभा चुनाव में कितने राष्ट्रीय दलों ने भाग लिया?
(a) 14 (b) 11
(c) 12 (d) 13 **[a]**

8. निम्नलिखित को सुमेलित कीजिए:
A. ऋग्वेद 1. ऐतरेय
B. सामवेद 2. पंचविश
C. यजुर्वेद 3. शतपथ
D. अथर्ववेद 4. गोपथ
(a) A-3, B-4, C-2, D-1 (b) A-1 B-2, C-3, D-4
(c) A-4, B-2, C-3, D-1 (d) A-4, B-3, C-1, D-2 **[b]**

9. गिरि सुमेल का युद्ध कब लड़ा गया था?
(a) जून, 1545 (b) जनवरी, 1543
(c) जनवरी, 1544 (d) जनवरी, 1545 **[c]**

10. पंचायतो राज संस्था में अनुसूचित जाति के लिये सीटों पर आरक्षण की व्यवस्था किस राज्य में नहीं है?
(a) त्रिपुरा (b) मणिपुर
(c) असम (d) अरुणाचल प्रदेश **[d]**

11. निम्न में से कौन सा कथन असत्य है?
(a) यदि पंचायत के विघटन के बाद शेष अवधि 6 माह से कम है तो चुनाव कराना आवश्यक नहीं है।
(b) पंचायत का कार्यकाल इसकी पहली बैठक से पाँच वर्ष है।
(c) पंचायत के विघटन के बाद 6 महीने की अवधि समाप्त होने से पूर्व चुनाव संपन्न कराने होंगे।
(d) शीघ्र विघटन के बाद नवगठित पंचायत पाँच वर्ष के कार्यकाल तक रहती है। **[d]**

12. अकबर का जन्म किस स्थान पर हुआ था?
(a) आगरा (b) अमरकोट
(c) काबुल (d) लाहौर **[b]**

13. भारत की पहली महिला केंद्रीय मंत्री थी :
(a) अमृत कौर (b) विजय लक्ष्मी पंडित
(c) सरोजिनी नायडू (d) मीरा कुमार **[a]**

14. निम्नलिखित को कालक्रमानुसार व्यवस्थित करें:
I. सरकारिया आयोग II. प्रशासनिक सुधार आयोग
III. पुंछी आयोग IV. राजमन्नार आयोग
V. आनंदपुर साहिब प्रस्ताव
सही युग्म चुनिये :
(a) I, V, IV, III, II (b) II, IV, V, I, III
(c) I, III, V, IV, II (d) II, III, I, IV, V **[b]**

15. निम्न में से कौन क्षेत्रीय परिषद् का सदस्य नहीं है?
(a) क्षेत्र के समस्त केंद्रशासित प्रदेशों के प्रशासक
(b) केंद्रीय सरकार का गृहमंत्री
(c) प्रधानमंत्री
(d) क्षेत्र के समस्त राज्यों के मुख्यमंत्री **[c]**

16. 1906 ई. में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के कलकत्ता अधिवेशन की अध्यक्षता किसने की थी?
(a) बाल गंगाधर तिलक (b) सुरेन्द्रनाथ बनर्जी
(c) दादाभाई नौरोजी (d) लाला लाजपत राय **[c]**

17. किस लोकसभा में सबसे कम महिलायें निर्वाचित हुयी?
(a) छठी (b) पहली
(c) तीसरी (d) पाँचवीं **[a]**

18. निम्न में से कौन संघीय कार्यपालिका का सदस्य नहीं है?
(a) प्रधानमंत्री एवं मंत्रिमंडल
(b) राष्ट्रपति -
(c) भारत के महान्यायवादी
(d) नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक **[d]**

19. अशोक का रानी का स्तम्भ लेख कौन से स्थान पर है?
(a) इलाहाबाद (b) दिल्ली
(c) मथुरा (d) बिहार **[a]**

20. निम्न में से कौन सा मौलिक अधिकार भारतीय नागरिकों को प्राप्त है, विदेशियों को नहीं?
(a) धार्मिक मामलों के प्रबंधन की स्वतंत्रता
(b) धर्म, नस्ल, जाति, लिंग या जन्मस्थान के आधार पर भेदभाव का निषेध
(c) कानून के समक्ष समानता
(d) प्रारंभिक शिक्षा का अधिकार **[b]**

21. निम्न में से कौन सा नीति निर्देशक तत्व मूल संविधान में नहीं था, वरन् संवैधानिक संशोधन के द्वारा जोड़ा गया?
(a) समस्त नागरिकों के लिये समान नागरिक संहिता सुनिश्चित करना ।
(b) पर्यावरण का संरक्षण तथा संवर्धन और वन तथा वन्य जीवों की रक्षा।
(c) कृषि और पशुपालन को आधुनिक और वैज्ञानिक प्रणालियों से संगठित करना।
(d) कलात्मक या ऐतिहासिक अभिरुचि वाले संस्मारक या स्थान का संरक्षण करना। **[b]**

22. संविधान सभा ने बी. आर अम्बेडकर की अध्यक्षता में प्रारूप समिति का गठन कब किया?
(a) 29 अगस्त 1947 (b) 26 नवंबर 1949
(c) 9 दिसंबर 1946 (d) 13 दिसंबर 1946 **[a]**

23. 1191 ई. में तराइन के युद्ध में किस शासक ने मुहम्मद गोरी के खिलाफ लड़ाई लड़ी थी?
(a) विजयचन्द (b) जयचन्द
(c) पृथ्वीराज चौहान (d) धर्मपाल **[c]**

24. 1876 ई. में सुरेन्द्रनाथ बनर्जी ने किस संस्था की स्थापना की थी?
(a) बम्बई एसोसिएशन
(b) दी इण्डियन एसोर्सिएशेन
(c) ब्रिटिश इण्डियन एसोसिएशन
(d) कलकत्ता नेटिव एसोसिएशन **[b]**

25. "अढ़ाई दिन का झोंपड़ा' 'कहाँ स्थित है?
(a) अजमेर (b) दिल्ली
(c) कन्नोज (d) बदायूँ **[a]**

26. किस बाद में उच्चतम न्यायालय ने निर्णय दिया कि प्रस्तावना संविधान का भाग नहीं है?
(a) एस. आर. बोम्मई (माभला
(b) बेरुवारी संघ मामला
(c) केशवानंद भारती मामला
(d) मिनर्वा मिल्स मामला **[b]**

27. नर्तकी की कांस्य-मूर्ति निम्नलिखित में से किस पुरातात्विक स्थल से प्राप्त हुई थी?
(a) धोलावीरा (b) लोथल
(c) मोहनजोदडो (d) हड़प्पा **[c]**

28. महासागरीय धाराओं की उत्पत्ति में कौन सा कारक उत्तरदायी नहीं है?
(a) चन्द्रमा की आकर्षण शक्ति
(b) पृथ्वी की परिभ्रमण गति
(c) महासागरीय लवणता में भिन्नता
(d) वाष्पीकरण व वर्षा **[a]**

29. छावनी बोर्ड प्रशासित किया जाता है-
(a) सार्वजनिक उद्यम द्वारा
(b) राज्य सरकार द्वारा
(c) केंद्र सरकार द्वारा
(d) दोनों केन्द्र व राज्य सरकारों द्वारा **[c]**

30. अशोका का शाहबाजगढी और मानसेहरा से प्राप्त अभिलेख कौन सी लिपि में हैं?
(a) ब्राह्मी लिपि - (b) खरोष्ठी लिपि
(c) अरेमाइक लिपि (d) यूनानी लिपि **[b]**

31. निम्नलिखित महाजनपद में से चम्पा किसकी राजधानी थी?
(a) मगध (b) अंग
(c) कोसल (d) काशी **[b]**

32. निम्नलिखित में से कौन सा विकल्प धन विधेयक के संबंध में राष्ट्रपति के पास मौजूद नहीं है?
I. अनुमति दे सकता है
II. अनुमति को रोक सकता है
III. पुनर्विचार के लिये वापस भेज सकता है
IV. संशोधन की सिफारिश कर सकता
सही युग्म चुनिये :
(a) I और III (b) केवल III
(c) III और IV (d) केवल IV **[c]**

33. निम्न में से कौन सा कथन सही नहीं है?
(a) राष्ट्रीय आयोग द्वारा वस्तुओं व सेवाओं के 10 करोड़ रुपये से अधिक मूल्य के मामले देखे जाते हैं।
(b) उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम, 2019 में त्रि-स्तरीय प्रवर्तन तंत्र स्थापित करने की व्यवस्था है।
(c) राष्ट्रीय उपभोक्ता विवाद निवारण आयोग संक्षेप में राष्ट्रीय आयोग के नाम से जाना जाता है।
(d) जिला आयोग द्वारा वस्तुओं व सेवाओं के एक करोड़ रुपये से अधिक मूल्य के मामले देखे जाते हैं। **[d]**

34. व्यापारिक अन्न उत्पादक क्षेत्र निम्नलिखित में से कौनसा नहीं है?
(a) कम्पाज प्रदेश (b) प्रेयरी प्रदेश
(c) स्टेप्स प्रदेश (d) पम्पाज प्रदेश **[a]**

35. निम्न में से कौनसी झील शिकागो शहर से सम्बन्धित है?
(a) विक्टोरिया झील (b) सुपीरियर झील
(c) मिशिगन झील (d) एरी झील **[c]**

36. विश्व व्यापार संगठन की स्थापना का वर्ष है?
(a) 1996 (b) 1995
(c) 1994 (d) 1993 **[b]**

37. भारत में 2020-21 में सकल जोडे गये मूल्य (चालू कीमतों पर) में औद्योगिक क्षेत्र का अंश था?
(a) 26.8% (b) 25.3%
(c) 25.9% (d) 24.7% **[c]**

38. भारत में राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम किस वर्ष बनाया गया था?
(a) 2011 (b) 2012
(c) 2013 (d) 2014 **[c]**

39. 2022 में भारत में मानव विकास सूचकांक में प्रथम कोटि प्राप्त करने वाला राज्य था?
(a) केरल (b) सिक्किम
(c) पंजाब (d) गोआ **[*]**

विज्ञापन

मुश्किल परीक्षाऐं भी आसान लगेगी
जब तैयारी होगी लक्ष्य के साथ

लक्ष्य क्लासेज उदयपुर

तृतीय श्रेणी (3rd Grade)

अध्यापक भर्ती परीक्षा

LEVEL-I and LEVEL-II

(हिन्दी, ENGLISH, संस्कृत, सामाजिक अध्ययन, SCIENCE-MATH)

- COURSE OFFERED -

- NOTES WITH LIVE FROM CLASSROOM BATCH
- NOTES WITH RECORDED BATCH
- MCQ BASED BATCH
- TASK BASED TEST SERIES
- OFFLINE CLASSROOM BATCH

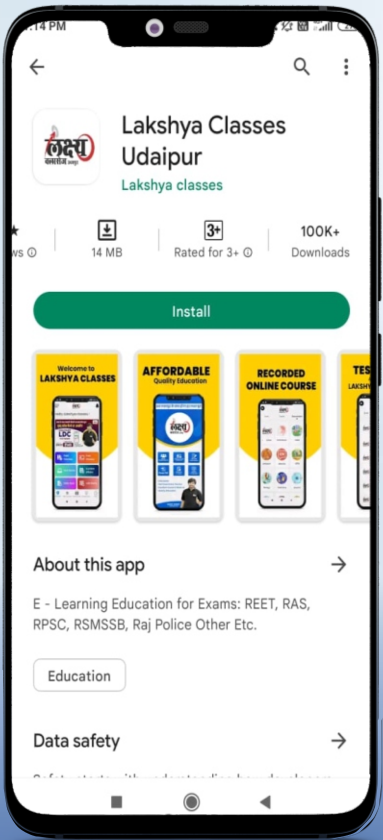

क्यों हैं लक्ष्य क्लासेज विशेष?

- व्यापक अध्ययन सामग्री
- MCQ की बुकलेट
- नियमित टेस्ट सीरीज
- पूर्णत: समर्पित यूट्यूब चैनल
- लाइब्रेरी सुविधा
- अनुभवी एवं योग्य फैकल्टी
- सुसज्जित स्मार्ट क्लासरूम
- ऑनलाइन एप्लीकेशन एक्सेस
- मासिक करंट अफेयर्स मैगज़ीन
- नियमित काउंसलिंग

MRP : ₹499

Scan to Download Lakshya App Now

Google play

INSTAGRAM FACEBOOK YOUTUBE TELEGRAM

S. No. : AP0022

CODE : APGC

सफलता के पथ पर सबसे तेज उभरता हुआ संस्थान

लक्ष्य क्लासेज™

M. 9079798005, 6376491126

Plot No 1104, Shiksha Mandir, Sec 4, Circle, Main Road, Udaipur